बौद्धिक संपदा भारत
एकस्व | अभिकल्प | व्यापार चिह्न
भौगोलिक उपदर्शन
INTELLECTUAL PROPERTY INDIA
PATENTS | DESIGNS | TRADE MARKS
GEOGRAPHICAL INDICATIONS

अटल बाल हिंदी कविता संग्रह

2025

अटल बाल
हिंदी कविता संग्रह
2025

कार्यालय महानियंत्रक एकस्व, अभिकल्प एवं व्यापार चिह्न,
बौद्धिक संपदा भवन, प्लॉट सं–32, सेक्टर–14, द्वारका, नई दिल्ली–110078

Office of the Controller General of Patents, Designs and Trademarks,
Bouddhik Sampada Bhawan, Plot no. 32, Sector -14, Dwarka, New Delhi -110078

अस्वीकरण: अटल बाल हिन्दी कविता संग्रह का यह अस्वीकरण स्पष्ट करता है कि पुस्तक की रचनाएँ लेखक की व्यक्तिगत कल्पना, भावनाओं और विचारों पर आधारित हैं। इसका उद्देश्य किसी व्यक्ति, संस्था या समुदाय को ठेस पहुँचाना नहीं है।

प्रो. (डॉ.) उन्नत पी. पंडित
PROF. (DR.) UNNAT P. PANDIT

सत्यमेव जयते

महानियंत्रक एकस्व,
अभिकल्प एवं व्यापार चिह्न
Controller General of Patents,
Designs and Trade Marks

संदेश

भारत के युवा हमारे राष्ट्र की सबसे बड़ी शक्ति हैं। वे 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के संकल्प को साकार करने में निर्णायक भूमिका निभाएंगे। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने युवाओं की इस भूमिका को रेखांकित करते हुए कहा है – "युवा शक्ति परिवर्तन का सूत्रधार भी है और परिवर्तन से लाभान्वित भी।"

इसी प्रेरणा से हमने युवाओं की रचनात्मकता, ऊर्जा और विचारों की अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से स्कूली छात्रों के लिए मौलिक कविता प्रतियोगिता का आयोजन किया। इस प्रतियोगिता के माध्यम से विद्यार्थियों ने अपनी भावनाओं और दृष्टिकोण को काव्यात्मक रूप में अभिव्यक्त किया है। भारतरत्न स्वर्गीय अटल बिहारी बाजपेयी जी के 101वे जन्मदिन पर यह सभी बाल कवियों ने अटल बाल कवि सम्मेलन में हिस्सा लिया और चुनिंदा रचनाओं का प्रस्तुतिकरण भी किया। इससे न केवल उनकी सृजनात्मक क्षमता और मौलिकता को प्रोत्साहन मिला है, बल्कि बौद्धिक संपदा अधिकारों, विशेषकर प्रतिलिप्यधिकार के प्रति जागरूकता भी बढ़ी है।

प्रस्तुत कविता–संग्रह में देश के विभिन्न कोनों से प्राप्त शीर्ष 100 कविताओं का संकलन किया गया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह संकलन पाठकों के लिए रुचिकर, प्रेरणादायी और ज्ञानवर्धक सिद्ध होगा।

सभी रचनाकारों एवं पाठकों को हार्दिक शुभकामनाएँ।

उन्नत पी. पंडित

प्रो. (डॉ.) उन्नत पी. पंडित

विषय सूची

क्रम सं.	शीर्षक	कवि	पृष्ठ सं.
1	ऑपरेशन सिंदूर	विघ्नेश संतोष दास	9
2	मंजिल	निकिता	10
3	ऑपरेशन सिंदूर	ताशा झा	11
4	टैरिफ बिल	प्रियांशु	12
5	ठहरो	वर्षा	13
6	ऑपरेशन सिंदूर	रितिका	14
7	लड़का–लड़की	श्रेया सचान	15
8	बौद्धिक सम्पदा नियम	धैर्य शर्मा	16
9	मैं मोबाइल हूँ	आदयाशा महापात्रा	17
10	वीर सैनिक	दोनिका अरोरा	18
11	ऑपरेशन सिंदूर	दीर्घा	19
12	कल्पना बने आविष्कार	वंश देवानी	21
13	पिता	कोमल पंत	21
14	ऑपरेशन सिंदूर	कौशल बुडानिया	22
15	आज फिर	भव्य सिंगल	23
16	ऑपरेशन सिंदूर	हरकिरत कौर	24
17	मौन में गूंजती पुकार है	आर्या पांडे	25
18	ऑपरेशन सिंदूर	अदनान मुनाफभाई रायजादा	26
19	जीएसटी 2.0 : आशा और परिवर्तन का स्वर	अनन्या सिंह	27
20	स्त्री	राजीव	28
21	लहू से सींची हुई खुशियां	कनक	29
22	ऑपरेशन सिंदूर	दीपांशी	31
23	कठिन प्रश्न	प्राची प्रिया	32
24	ऑपरेशन सिंदूर	सुप्तिप्रिया साहू	33
25	मैं और नदी	विवेक पाल	34
26	कहा कवि से ऐसी रचना बनाएँ जो	सावन कुमार	35
27	सपनों को जो हमारे कर दे साकार	मानवी राठौर	36
28	वह खिड़की	साक्षी	37

क्रम सं.	शीर्षक	कवि	पृष्ठ सं.
29	ऑपरेशन सिंदूर	अन्वेषा रघुवंशी	38
30	धरती की पुकार	माही जोशी	39
31	कैनवास की बातें	वेनुमु मीरा सहस्र	40
32	संविधान तो रचा	अनन्या पाठक	41
33	सड़क सुरक्षा	श्रीयांशु सेखर साहु	42
34	ऑपरेशन सिंदूर	राजबीर कौर	43
35	''स्वच्छ भारत का आधार– नागरिक शिष्टाचार''	अमायरा कपूर	44
36	'कविता – सूरज चाचू'	आरव मिश्रा	45
37	ऑपरेशन सिंदूर	आरुशी सिंह	46
38	ज्ञान का दीप	साक्षी नायक	47
39	सिंदूरः हिंदुओं का बदला	पैरिसा	48
40	''मेरी कविता''	चेष्टा जांगिड़	49
41	उड़ान हिन्दुस्तान की	अदिति बाबासहेब दांगट	50
42	ऑपरेशन सिंदूर	निहारिका बगड़िया	51
43	शिक्षा सफर	अनुष्का संदेश कान्हेड़कर	52
44	काश मैं भी लड़का होती	अनन्या प्रियादर्शिनी महुंता	53
45	समसामयिक मुद्दें	दिव्यांशी राय	54
46	मेरा मन	इतिशा रस्तोगी	55
47	ऑपरेशन सिंदूर : वीरता की लालिमा	लक्षिता गुप्ता	56
48	बच्चे अब	युक्ता अरोड़ा	57
49	कागज	सहजप्रीत कौर	58
50	भ्रष्टाचार	आरुषि गुप्ता	59
51	विचारों की उड़ान, सीमाओं से परे	कीर्तिका नोंगमेंकापम	60
52	की नई कविता कैसी हो	अविनाश सिंह	61
53	सृजन की लौ	श्रेयश यादव	62
54	सपनों की ज्वाला	अरीबा मैराज	64
55	स्वच्छता हमारे ख्वाब	दित्सा नांबियार सी पी	65
56	समसामयिक मुद्दे	परनीत कौर	66
57	उपेक्षित शेर की दहाड़	रेवथ प्रशांत चौहान	67
58	खेल बना अधर्म का पथ	कुमारी लकी	68

क्रम सं.	शीर्षक	कवि	पृष्ठ सं.
59	ऑपरेशन सिंदूर	आयुष्मान मिश्रा	70
60	सतत विकास	कु. मुस्कान संदीप साहू	71
61	इंसाफ की पुकार	कंगना कनौजिया	72
62	मेरा घर	हरप्रीत कौर	75
63	सजाएँ भारत को प्रगति के संग	प्राची सिंह	76
64	हमारी हिंदी	मयंक कुमार सिंह	77
65	हनुमान	मिहिर पोल	78
66	सरकारी नीतियाँ	काव्या सिंह	79
67	ऑपरेशन सिंदूर	मन्वय सागर शहा	80
68	ऑपरेशन सिंदूर	आराध्या राव	81
69	नारी	सृष्टि राज महतो	82
70	बाढ़	ऐश्वर्या दुर्गम	84
71	बुंदेले हर बोलो की जुबान एक औरत की कहानी	परिधि	85
72	ऑपरेशन सिंदूर	साक्षी गिरी	87
73	ऑपरेशन सिंदूर	गरिमा	88
74	ऑपरेशन सिंदूर	उदभीता दास	89
75	मेरे सपनों की मधुशाला	वैष्णवी	90
76	विकसित भारत की नई उड़ान	देवीना सिंह	91
77	ज्ञान का दीप	चारुव्रत बैंस	92
78	माँ – मेरी दुनिया	साई श्रेहंस दाश	93
79	स्मृति के यादगार पल	समीक्षा पात्र	94
80	युग प्रवर्तक	आभास वर्मा	95
81	माँ की ममता	अक्षत कुशवाहा	96
82	क्या ये सपने सच होंगे?	रितिका चंदुलाल धुमाल	97
83	ये देश हमारा है	अंकुश सिंह तोमर	98
84	ऑपरेशन सिंदूर	आहान सचदेवा	100
85	ऑपरेशन सिंदूर	मानवी जाँगिड़	101
86	ऑपरेशन सिंदूर	भाविन सिंह डूडी	102
87	भारत का सिंदूर	योग रणशूर	103
88	ऑपरेशन सिंदूर	काव्या एस	104

क्रम सं.	शीर्षक	कवि	पृष्ठ सं.
89	ऑपरेशन सिंदूर	श्रीजा तिवारी	105
90	एक दिन	आकांक्षा खरे	106
91	आतंकवाद	निलय सचान	107
92	भारतीय वीरता का चिह्न अभियान सिंदूर	अलीशा भट्टाचार्य	108
93	बदलाव की पहली किरण	त्रिशा राजपूत माथुरिया	109
94	मन है, पंछी बन जाऊँ	हिमांशु राय	111
95	शहीदों की गाथा	स्वाति कुमारी	112
96	सिंदूर की दहाड़	अद्विक देवानी	113
97	ऑपरेशन सिंदूर	रिया	114
98	एकता में शक्ति	अंशुमान	115
99	स्वदेशी अपनाओं	अरनव मिश्र	116
100	सरकारी नीतियों	एकलव्य कुमार वर्मा	117

1

ऑपरेशन सिंदूर

एक सुबह ऐसी आई थी..
सबकी जिंदगी मे नई खुशियाँ लाई थी..
भोर के साथ कोयल भी नया गीत गायी थी..
हर जिंदगी अपनो के साथ खुशियों में समाई थी।

न जाने खुशियों को किसकी लगी नजर..
अचानक जिंदगी ने बदल ली अपनी डगर..
स्वर्ग सी धरती पर आतंकियों ने ऐसा ढाया कहर..
एक ही पल में हो गई जिंदगी ज़हर।

देख आतंक को रो पड़ा देश महान....
पर बदला लेने निडर होकर खड़ा हुआ जवान...
स्वर्ग– सी धरती हुई थी खून से लथपथ..
देख घिनौने मंजर को बदले की ली थी देश ने शपथ।

किसी ने खोया बेटा तो किसी ने खोया भाई..
देख इस मंजर पड़ोसी ने खुशियाँ मनाई..
बहुत रोई थी बहन खो कर अपना सनम..
देश के जवान ने बहन के सिंदूर की खायी थी कसम।

रोकना था आतंकीयों का कदम अगला..
ठानकर खड़ा हुआ देश लेने बदला..
आतंक को मिटाने जवानों ने बाँधा सर पर कफन...
घर में घुसकर कर दिया आतंकियों को दफन।

शत् शत् प्रणाम कर नतमस्तक हुआ देश महान..
अपने बहनों के सिंदूर के लिये जान पर खेल गया जवान..
देख रौद्र रूप देश का पड़ोसी भागा बचाकर अपनी जान...
देख एकता देश की, दिल से आवाज निकली मेरा भारत महान।

विघ्नेश संतोष दास
सांदीपनि स्कूल, नागपुर

2

मंजिल

अमावस का चाँद नहीं,
पूर्णिमा का चाँद बनना होगा
मंगल जैसा चमकना नहीं,
सूरज जैसा जलना होगा।
हर पग पर कांटे होगे,
फूल तुझे ढूँढ़ना होगा,
एक दिन मेहनत करके छोड़ न देना,
हर दिन मेहनत करना होगा।2।
दुनिया बिछाएगी जाल तेरे लिए,
पर तुझे उस जाल से बचना होगा,
पीछे खीचने वाली दुनिया से
तुझे हर दम आगे बढ़ना होगा।
तू थककर भी हारना नही
हारकर भी तुझे जीतना होगा,
न देख मुड़–मुड़कर पीछे,
तुझे आगे ही आगे बढ़ना होगा।
देख नजरे उठाकर जरा,
मंजिल तेरे पास खड़ी है
बस तुझे उस पार पहुंचना होगा।2।

निकिता
कन्या शिक्षा परिसर, सूर्य फाउंडेशन द्वारा संचालित, सीहोर (मध्य प्रदेश)

3

ऑपरेशन सिंदूर

पहलगाम की सुंदर वादियों में
जब मासूमों के रक्त की धारा बह रही थी
हमें न्याय कैसे मिलेगा
क्रंदित आँखें पूछ रही थीं

उस अंधकार में जब
न्याय की आशा जगी
ऐसा जवाब दिया दहशतगर्दों को
दुनिया भी कभी सोच ना सकी

सिंदूर का बदला सिंदूर से
आँसुओं का बदला खून से लिया
भारत ने इस न्याय का नाम
आपरेशन सिंदूर रख दिया

उन्हें लगा इस बार भी
भारत चुप रह जाएगा
पर उन्हें क्या पता
नया भारत युद्ध का शंखनाद बजाएगा

दुनिया का भ्रम दूर किया
आतंकी ठिकानों को चकनाचूर किया
नागास्त्र, ब्रह्मोस और आत्मरक्षा प्रणाली पर
पूरे राष्ट्र ने गुरूर किया

शुरू युद्ध तो उन्होंने किया
ख़त्म करने की बारी हमारी थी
शांति के बाद भी
युद्ध की पूरी तैयारी थी

अंत हुआ इस युद्ध का
सबने देख लिया
नए भारत से ना टकराना
यह सबक विश्व ने सीख लिया

ताशा झा
डीएवी पब्लिक स्कूल गुमला,
पुलिस लाइन के पीछे, नीमटोली,
गुमला, झारखंड

4

टैरिफ बिल

कहीं दूर दराज जगह पर,
निकला था एक कागज।
जिसका नाम था
टैरिफ बिल।

यह बिल इतना घातक,
गिरा दे देश की अर्थव्यवस्था।
इम्पोर्ट और एक्सपोर्ट को कर दे बंद,
देश हो जाय पूरा बंद।

ट्रम्प ने दिया बिल
सब्सिडी गई हिल।
यह था इतना बड़ा झटका
भारत और चीन को पटका।

भारत को लगाया पचास प्रतिशत,
और चीन को लगाया नब्बे प्रतिशत।

पूरे भारत ने ना मानी हार,
और स्वदेशी चीजों से किया चमत्कार।

भारतीयों ने स्टार्टअप किए उत्पन्न,
अमेरिकन कंपनियां करने लगीं भिन-भिन।
हमने बनाए स्वदेशी हथियार,
विदेशी हथियारों का किया बहिष्कार।
बढ़ी भारत की अर्थव्यवस्था,
बदली विदेशों की चाल,
भारत हुआ मालामाल।

प्रियांशु
एयर फोर्स स्कूल चंदन नगर,
नगर रोड, पुणे

5

ठहरो

जरा सोचो !
क्या है ये सही विचार...?
मना रहे हैं हम.
पुतला दहन का त्योहार.....!
या फिर ''प्रथा'' का वस्त्र
करके धारण....
कर रहे हैं अपने
विवेक का अनुसरण ... !
और फिर रावण दहन ही क्यों ... ?
जरा सोचो
नहीं कर रहे हम
क्रोध या अहंकार का दहन क्यों ...?
रावण अंत के सिर्फ
श्रीराम ही अधिकारी हैं
मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम
आदर्श हमारे हैं ..... ।।
श्रीराम में अच्छाई–सच्चाई,
मर्यादा–सम्मान, सारे गुण
हैं विद्यमान
जरा ठहरो ! और सोचो !
क्या हममें है श्रीराम
की भांति गुण समान ...?
झाँको! जरा देखो!
अपने अंदर की सच्चाई .... !
क्या है हमारे अंदर
श्री राम की परछाई ...?

लालच, ईर्ष्या, क्रोध, बुराई
ही है हमारा वस्त्र,
तो फिर हम किस हक से
उठाते हैं शस्त्र ...?
हमें तो है ही नहीं यह ज्ञान,
कि क्या हैं हम एक सजीव मनुष्य
या फिर हम भी हैं,
उसी पुतले के समान ...?
दिखाते तो अच्छाई की बुराई पर जीत है,
परंतु,
अच्छाई फिर हमारे विपरीत है ... !
जब मनुष्य मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम
की तरह बन पाएगा.....
वास्तव में ''रावण दहन'' का
अधिकार तभी कहलाएगा।।
अज्ञानता में हुई भूल को
करते हैं आज सही,
पुतला दहन के स्थान पर
करके अपनी बुराइयों का
अंत,
समाज को देते हैं,
परिभाषा नई ..

वर्षा
पीएम. श्री के.वी. नं.–1
अमृतसर, पंजाब

6

ऑपरेशन सिंदूर

अप्रैल का बाइसवाँ दिन था, चारों ओर खुशियाँ थी छाई,
पाकिस्तानी दहशतगर्दों को, यही बात बिल्कुल ना भायी।
भारत की पावन धरती पर, पहुँच गए बंदूकों के संग,
मासूमों के खून को देखो, बना दिया होली का रंग।

धर्म पूछ कर, नाम पूछ कर, चुन–चुन कर भेदी छाती,
लाल हो गई कश्मीर की धरती, पहलगाम की बैसरन घाटी।
छब्बीस से ज्यादा बहनों के, जब छीन लिया चेहरे का नूर,
उन असुरों से बदला लेने, सेना ने किया ऑपरेशन सिंदूर।

पंद्रह दिन के भीतर देखो, भारत का भीषण पलटवार,
आतंक के आकाओं के घर में, चारों ओर बस हाहाकार।
राफेल की गर्जन, मिग की उड़ान, सेना का छाया गुरूर,
मिट्टी में मिले आतंकी अड्डे, सारे हो गए चकनाचूर।

एक से बढ़कर एक मिसाइलें, भारत की जब सज्ज हुईं,
पाकिस्तान में मची खलबली, अब गीदड़ भभकी बंद हुई।
हमने दुनिया को बता दिया, हम नहीं किसी को छेड़ेंगे,
हमको अगर किसी ने छेड़ा, तो उसको कभी ना छोड़ेंगे।

रितिका
बाल भारती पब्लिक स्कूल, सेक्टर–21,
नोएडा, गौतम बुद्ध नगर,
उत्तर प्रदेश

7

लड़का–लड़की

लड़का–लड़की नहीं बराबर, सिर्फ आज यह नारा है,
इसीलिए तो अब तक पीछे, हिंदुस्तान हमारा है।।.

लड़की पैदा हुई अगर तो, घर में मातम छाता है,
लड़की जनने का दोष, सिर्फ माता पर ही जाता है ।
दिल से पूछो बात अगर, सभी को लड़का प्यारा है,
इसीलिए तो अब तक पीछे, हिंदुस्तान हमारा है.....

बड़े–बड़े भाषण दे डाले, बड़े–बड़े उपकार किए,
लेकिन लड़की ने आंसू, एक नहीं सौ बार पिए।
कानून का बड़ा पुलिंदा, नारी–शोषण से हारा है,
इसीलिए तो अब तक पीछे, हिंदुस्तान हमारा है.....

एक समय था, जब समाज में लड़की पूजी जाती थी,
लड़की पैदा होते ही, कहते थे लक्ष्मी आती थी।
मगर दहेज के दानव ने ,लड़की को कोख में मारा है,
इसीलिए तो अब तक पीछे, हिंदुस्तान हमारा है.....

लड़का–लड़की की सोच में, हमको परिवर्तन अब लाना है,
लड़की के सम्मान को वापस, हमको आज दिलाना है
सामाजिक कुरीति यह भारी, मैंने नहीं विचारा है
इसीलिए तो अब तक पीछे, हिंदुस्तान हमारा है.....

लड़का–लड़की नहीं बराबर, सिर्फ आज यह नारा है,
इसीलिए तो अब तक पीछे, हिंदुस्तान हमारा है.....

श्रेया सचान
डीपीएस, एनटीपीसी विद्युत नगर,
गौतम बुद्ध नगर

8

बौद्धिक सम्पदा नियम

ज्ञान से पनपता है नवाचार,
अपने नवाचार को सहेजना है हर एक
नवाचार ही है प्रगति की कुंजी,
बुद्धि और बौद्धिक ज्ञान को सहेजें,
इसी में हो हम सब की रुचि।

ज्ञान की दुनिया है बहुत महान,
यही है मानव की बुद्धि की पहचान,
हम सब को मिलकर बनाना है इसे
बलवान।

ज्ञान से पनपता है नवाचार,
अपने नवाचार को सहेजना है हर एक
रचयिता का अधिकार
26 अप्रैल को मनाते है हम सब बौद्धिक
सम्पदा दिवस बार–बार।

कॉपीराइट, पेटेंट, ट्रेडमार्क रचयिता की है
ताकत,
इन्ही के भरोसे कोई बनता है अविष्कारक।

लेखक, कवि और वैज्ञानिक का दिल से करो
सम्मान
कला,साहित्य और विज्ञान इन्हीं का है वरदान

रोकता दूसरों को नकल से और रोकता
इसका दुरुपयोग,
आविष्कार बिना आज्ञा न कर सके,
यही बौद्धिक संपदा नियम उपयोग।

धैर्य शर्मा
डुंडलोद पब्लिक स्कूल, सीतसर,
झुंझुनू, राजस्थान

9

मैं मोबाइल हूँ

मैं मोबाइल हूँ
मैं ज्ञान का भंडार हूँ
मगर मेरा इस्तेमाल सावधानी से करना
मैं नींद चुरा लेता हूँ
मैं चैन चुरा लेता हूँ
मैं आंखों की रोशनी ही मिटा देता हूँ।
मैं मोबाइल हूँ
आजकल मैं बड़ा काम कर रहा हूँ
दुकानों और रोजगारों को खा रहा हूँ
लोग मेरे द्वारा आनॅलाइन सब कुछ
मंगाने के आदि होते जा रहे हैं
एक दिन ऐसा भी आएगा जब बाजारों में
सन्नाटा दिखाई देगा।
मैं मोबाइल हूँ
मैं टॉर्च को खा गया
मैं टेप रिकॉर्डर को खा गया
मैं कैमरे को भी खा गया
मैंने गली नुक्कड़ के सारे खेल निगल लिए
अब बच्चों का बचपन खा–खाकर
और भी मजबूत होता जा रहा हूँ।
मैं मोबाइल हूँ

आदयाशा महापात्रा
पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय
नंबर 1, उड़ीसा

10

वीर सैनिक

सरहदों पर खड़े वीर सैनिकों, मैं तुम्हें प्रणाम करती हूँ
थोड़ा सा तुम्हारी जिंदगी का पहलू, इस कविता में
बखान करती हूँ

सरदी हो गरमी या हो तेज हवाएँ,
देश की रक्षा के लिए सरहदों पर खड़े रहते हो पैर जमाए।

घरवालों से दूर रहने का दर्द दिल में समाएँ रखते हो
माता, पिता, बीवी, बच्चों की याद दिल में दबाएँ रखते हो।

हर वक्त अपने सर पर बाँध कर रखते हो मौत का कफन,
जो देखें बुरी नजर से देश की तरफ उसे कर देते हो दफन।।

देश की जिम्मेदारी के आगे सब जिम्मेदारियाँ लगती है छोटी,
पानी पी कर ही वक्त काट लेते हैं जब नहीं मिलती रोटी ।।

कई बार तो बीवी बच्चों से मिलने की आस लिए सरहदो पर शहीद हो जाते हैं,
मौत का सेहरा बाँध कर तिरंगे में लिपटकर घर जाते हैं।।

दोनिका अरोरा
भारतीय विद्या मंदिर, उधम सिंह नगर, लुधियाना

11

ऑपरेशन सिंदूर

सुबह–सुबह चहक रही थी चिड़ियां,
जब सुनी गोलियों की गूंज थी।
धर्म पूछ पूछ तोड़ी सुहागनों की चूड़ियां,
थर–थर कांप उठी 26 परिवारों की नींव थी।

कश्मीर से कन्याकुमारी सहमी थी धड़कने,
पर आंखों में जली थी बदले की चिंगारी।
तब उतर पड़ी मैदान में सोफिया कुरैशी और व्योमिका सिंह,
लेकर पूरे भारत की जिम्मेदारी।

दुश्मनों ने लिया था हल्के में,
समझा गया था हमें रूई।
भारतीय सेना ने तब लांघ सीमा,
दुश्मनों को चुभाई थी सुई।

डराया गया हमें ,पर हम कहां कम थे,
ब्लैकआउट कर फिर, उन्हीं को फंसाया हमने।
उन्होंने भी निकाले, फिर अपने पुराने दांव पेंच,
तो हमने हवा में ही कर दिए, उनके सारे खेल खत्म।

छीन लिया था हक, नारियों से उनके मांग के सिंदूर का,
निकाला तब 'पीएम नरेंद्र मोदी'ने ऑपरेशन सिंदूर था।
उड़ा डाले आतंकवादियों के 9 अड्डे, पन्नों के भांति,
दे डाली मिसाल पूरी दुनिया को ,भारत की क्रांति की।

कोई भारतीय दिल ऐसा, जिसमें बदले की आग नहीं,
दुश्मन पुराने और जवान नए, पर जोश वही था।
भारत में न घुसने दी पाकिस्तानी मिसाइलें,
हमारी वायु सेना ने,
याद करेगा हर दिल, कि ऐसे हिम्मत वाले थे।

आज हर भारतीय डंके की चोट पर कहता है कि,
जब जब होगा मासूमों पर वार।
तब तब आएंगे 1965,1971,कारगिल वॉर,
ऑपरेशन मेघधूत, ऑपरेशन विजय, तथा
ऑपरेशन सिंदूर जैसे हजारों जवाब।

अपनी जुबानी सुनाती हूं,
मैं यह वीरता की कहानी।

कि, सुबह–सुबह चहक रही थी चिड़िया ,
जब सुनी गोलियों की गूंज थी।

दीर्घा

लक्ष्मी तारा राठौर सीनियर सेकंडरी स्कूल

12

कल्पना बने आविष्कार

जब कल्पना बने आविष्कार
बौद्धिक संपदा अधिकार बौद्धिक
जॉन लॉक का था सिद्धांत
श्रम न जाएगा बरबाद

स्टार्टअप का जमाना है
वैश्विक नवाचार सूचकांक में आना है
स्कूलों में दिखाओ टैलेंट
करवाओ कॉपीराइट और पेटेंट

शब्द डिजाइन और ब्रांड
पंजीकरण सुरक्षा ट्रेडमार्क
विशिष्ट उत्पाद मूलस्थान
जीआई उसे दे पहचान

भारत हैं अनमोल विरासत
योग और आयुर्वेद है उसकी ताकत
नीम हल्दी का हुआ था शोषण
पारंपरिक ज्ञान लाइब्रेरी डिजिटल

बौद्धिक संपदा आर्थिक विकास
करता संरक्षण एकाधिकार की बात
निश्चित अवधि रॉयल्टी का प्रावधान
सेमीकंडक्टर और अनुसंधान

स्वावलंबी, आत्मनिर्भर का नारा
भारत विकसित हो हमारा

वंश देवानी

13

पिता

माँ की मांग का सिंदूर हैं पिता
दादा दादी का गुरूर हैं पिता
माँ के जीवन की ढाल हैं पिता
बच्चों के लिए हर सवाल हर जवाब हैं पिता
पूरे परिवार के पालक हैं पिता
हर मुसीबत में सहायक है पिता
हम सब के जीवन की भोर हैं पिता
परिवार की एकता की डोर हैं पिता

हर संकट में जतन हैं पिता
परिवार के अनमोल रत्न हैं पिता
बच्चों के जीवन की ज्योति हैं पिता
माँ के मंगलसूत्र के मोती हैं पिता
जीवन में हर दुख हंस कर सहते हैं पिता
अन्दर से चाहे दुख भी हो पर
किसी से नहीं कहते हैं पिता
माँ की हर सुबह हर शाम की आस हैं पिता
पूरे परिवार की साँस हैं पिता
दादा दादी का विश्वास हैं पिता

बच्चों के लिए बहुत खास हैं पिता
चाचा ताऊ के साथी हैं पिता
बुआ की हर राखी हैं पिता

दादा दादी का अभिमान हैं पिता
माँ की आन बान शान है पिता
बच्चों के खुशियों की खान हैं पिता
पूरे परिवार की जान हैं पिता

''पिता हैं तो घर में बहार है''
''पिता हैं तो जिंदगी गुलजार हैं''
''वरना, चारो तरफ अंधकार हैं''

कोमल पंत

14

ऑपरेशन सिंदूर

आओ आज सुने एक कहानी,
अजय भारत की अमर जुबानी।

जब दुश्मन करे छेड़खानी,
उसकी मिट जायेगी, निशानी।
भय से मीलों दूर वह अभय की दीवानी,
यही है भारत माँ की कहानी।

हर दिल में बसी है तिरंगे की शान,
हमारी हर सांस में गूँजे जय हिन्दुस्तान।
जवानों ने पुकारा सुन ले पाकिस्तान,
जब भारत भूमि की शान पर आई आन,
तब मिट्टी में मिल जायेंगी तेरी दॉस्तान।

जब दुश्मन ने गोली दागी, भारते ने कुछ कर दिखलाने की ठानी,
चाहे हो कारगिल, पुलवामा या पहलगाम,
पाकिस्तान के मंसूबो पर भारत ने हरदम लगाई लगाम।

देश के वीर जवानों की यह कहानी,
सदैव रहेगी अमर जुबानी।

ऑपरेशन सिंदूर की जब हुई शुरुआत,
पाकिस्तान से जब नहीं बनी बात,
तब उसने लगाई, घात,
भारत के जवानों ने फिर भी दी उसे मात,
याद रखेंगी आने वाली पीढ़ियाँ यह बात।

यही है भारत माँ की कहानी,
अजय भारत की अमर जुबानी।

दुश्मन पर भारी पड़ी उसकी छेड़खानी,
भारत नहीं सहेगा यह मनमानी

यही है भारत माँ की कहानी,
अजय भारत की अमर जुबानी।
जय हिंद! जय भारत!

कौशल बुडानिया
डूण्डलोद पब्लिक स्कूल

15

आज फिर

जब बच्चों के आँसुओं से ढक गए थे बर्फीले पहाड़
नई ब्याही विधवा की चीख़ों से गूंज उठे थे सब परिवार,
पच्चीस लोगों की जान ने याद दिलाया उस देष का प्राकृतिक संविधान,
एक बार फिर दोहराया गया इतिहास,
एक बार फिर बनाया गया मासूमों को सोने का पात्र।।

वही हुआ जो होता है,
चार दिन की ख़बर फिर सब समझौता है।
किसी का पति, पिता, बेटा
इतना भी कोई रोता है?
जिसकी आँखों का तारा, तारा ही बनकर रह गया
उन्हें हँसकर जाकर दिलासा देना आसान नहीं,?
जिस तरह आसान है उन्हें अनदेखा करना
जिनके अब घर का कोई निशान नहीं।

दो देशों की आपसी जलन ने,
इंसानियत से नाता तोड़ दिया।
भेदभाव के इस खेल ने,
करुणा से भी मुख मोड़ लिया।

आज फिर एक ख़बर ने हिला दिया हमारा विश्वास,
आज फिर वो बच्चा डरता है कदम रखने से बाहर,
आज फिर उस पक्षपात ने झंझोड़ दिया हमारा प्यार।

एक बार फिर दोहराया गया इतिहास,
एक बार फिर बनाया गया मासूमों को सोने का पात्र।।

भव्य सिंगल
बीसीएम स्कूल, 32 सेक्टर, चंडीगढ़ रोड, लुधियाना, पंजाब

16

ऑपरेशन सिंदूर

सिंदूर, मिटाने वाले सुन, यह सदा जगमगाएगा,
ऑपरशन सिंदूर तुझे, नष्ट कर जाएगा।

चूड़े और मेहंदी की चमक, न तू पहचान पाएगा,
तेरा खुन तुझे, अपना रंग दिखाएगा।

सिपाही जब मैदान में आए तो धरती कांप जाए,
इन आतंकवादियों की इतनी हिम्मत, कि यह हमारे
देशवासीयों को दिन – दहाड़े मार जाए।

प्रणाम है उन जवानों को, जो लड़े जंग के मैदान में,
हम सम्मान करते हैं उनका, उन्हीं की वजह से
आज हम खड़े हैं इस संसार में।

तुमने धर्म पूछकर मारा था, हम धर्म बताकर मारेंगे,
उसे मारेंगे रंगे तुमको, कि हमारे वतन का नाम भूल नहीं पाओगे।

वतन हिन्दुस्तान है, पाप को मिटाना हमारा काम है,
हम आज तुम्हें सबक सिखाएँगे, जगत के लिए हैं,
जीए हैं, और इस के लिए मर जाएँगे, और
जीत को हासिल कर दिखाएगे।

जय हिन्द

हरकिरत कौर
लक्ष्मी तारा राठौड़
पब्लिक स्मार्ट स्कूल
सियालबा–माजरी

17

"मौन में गूंजती पुकार है"

विचारों में जिनके ज्वाला धधकती
फिर कृतियों में क्यों वो शांत पड़े
निर्दयता समक्ष उनके हर बार होती
सब क्यों फिर चुपचाप रहते मौन खड़े।
खुद जो बुलंद आवाज उठाते थे
आज क्यों उनके शक्ति में विराम लगा
अन्याय देख जिनका मन सदा थक गया
क्यों उनके भीतर का ना वो राम जगा।।
सवालों से भरा मेरा मन खुद से पूछता
की हाँ रहती हूँ एक ऐसे देश में
जहाँ मुझको पूजा जाता
जब बात करूँ अपनी सुरक्षा की
मेरे इज्जत को कुछ ना समझ
अपनी जागीर सा लूटा जाता हैं।
अकेली लड़ती मैं मिथ्या अधिकारों से
छिपे जो निर्दयता के व्यभिचारों से।
क्यों ईमान मेरा रेत के भाव हैं बिकता
साथ देने को कोई कस्बा ना गाव हैं दिखता
फिर किन पर ही मैं विश्वास करूँ
यहाँ अपनों से भी मुझे घाव हैं मिलता।
पूछें मैं सबसे कि क्यों
यहाँ गलत भी हो मेरे साथ तो
मुझे ही दोषी ठहराया जाता हैं
अपराधी यहाँ आजाद घूमे बेखौफ हैं
उसकी शुद्धता का परचम लहराया जाता हैं।
कहने को तो बहुत सी बातें लेकिन
देखना जरा फिर कोई घटना घटने वाली है
देश में सड़को पर नई भीड़ लगने वाली है।।

आर्या पांडे
संत अतुलानंद कॉन्वेंट स्कूल
कोइराजपुर, हरहुआ, वाराणासी,
उत्तर प्रदेश

18

ऑपरेशन सिंदूर

एक सिंदूर का साहस बन गया
प्रतीक बलिदान का है
वीरों की हर रक्त बूंद की
सजाये रखती देश की शान है।
तोपों की ललकारों को भी
शौर्य से अपनाया है,
लिये वीरों ने जख्म और घाव,
बचाने हमारे देश का सम्मान है
रणभूमि में लथपथ होकर
लिखी जीत की धार है,
यह विजय
हमेशा चमकेगा
'दास्तान–ए–सिंदूर' बनकर,
इतिहास रहेगा।
भारत माँ के वीर सपूत कभी ना झुकने देंगे।
हमेशा लहराता रहेगा तिरंगा – आन, बान
और शान से।

इसी तरह पराक्रम से गूँजता रहेगा,
भारत माँ का नाम है
कभी ना भूलेंगे वह अमर गाथा,
जिसने खोया माथे का सिंदूर।
भले ही मिटा हो माथे का सिंदूर,
यह सिंदूर हमारे देश की शान है।
वीरों की इस लगन से
दुश्मनों ने मानी हार है।
सदा रहेगा दिल में शौर्यता
मान–सम्मान और बलिदान है।
भारत माँ के वीर सपूतों को
दिल से करोड़ों सलाम है।
दिल से करोड़ों सलाम है।

अदनान मुनाफभाई रायजादा
श्री केंद्रीय विद्यालय ओखा पोर्ट,
द्वारका मेन रोड गांधीनगरी ओखा

19

जीएसटी २.० : आशा और परिवर्तन का स्वर

यह केवल अंकों का फेरबदल नहीं है आज,
न हीं सरकारी खजाने की कोई सुखी गणना का साज।
यह तो है करोड़ों परिवारों की सांस,
एक आम आदमी की आंखों में उम्मीदों का आभास।
दुनिया ने देखा इसे साहसिक निर्णय मान,
अर्थव्यवस्था की धड़कन तेज करें यह है नया विधान।
उन्होंने देखी जटिलता पर सरलता की जीत,
बाजार की हर मेज पर अब बजे न्याय का संगीत।
यह क्यों लाया गया प्रश्न सरल है नहीं,
उत्तर इस का जन कल्याण में छिपा है यही।
दामों की ऊंचाई ने जो दीवारों थी रची,
उन्हें गिरने का संकल्प था यही, बात है सच्ची।
लाया गया, क्योंकि महंगाई की मार थी जोरदार,
मध्यम वर्ग का माथा सिकुड़ता था बार बार।
छोटी खरीद पर जब अत्यधिक कर लगता था,
तो सपनों का विस्तार वहीं पर रुकता था।
यह शासन की वह पहल है जो ध्यान रखती है,
गृहणी के मासिक बजट का जो पहचान रखती है।
जिसने दवाइयां और बीमा सुरक्षा को किया मुक्त,
यह संवेदनशीलता है नहीं कोई झूठ।
जीएसटी 2.0 लाया है एक हल्कापन,
जो छोटे व्यापारी के कंधे का कम करें तनाव और मन।
अब वह कागजों के भँवर में नहीं उलझेगा,
उत्पादन और व्यापार पर पूरा ध्यान देगा।
यह आर्थिक क्रांति का देखो दूसरा चरण है,
जो पिछली कठिनाइयों को धोकर लाया नया भरण है।
यह जन –केंद्रित शासन की सच्ची भावना है,
जहां कर–व्यवस्था का हृदय आम नागरिक के लिए धड़कता है।

अनन्या सिंह
संत अतुलानंद कॉन्वेंट स्कूल
कोइराजपुर, वाराणसी, उत्तर प्रदेश

20

स्त्री

ये औरत है कहाँ कुछ कर पाएगी?? अपने सुहाग के बिना तड़प–तड़प के मर जाएगी। इसकी माँग से सिन्दूर हटा, हम इसका वंश मिटा देंगे, इसके सुहाग के खींच प्राण हम खूब मजा लेंगे।

ऐसी सोच भी सर्वविनाशी, आतंकी साम्राज्य की अभिलाषी है। स्त्री को कमजोर समझ उसने उस शक्ति को ललकारा है। जुल्म ढाह औरत पर, स्वयं अपना काल पुकारा है। कमजोर नहीं, ये जगदम्बा है, ये काली है, महिषासुर मर्दिनी ये सर्वशक्तिशाली है।

ये सवित्री है जो यम से लड़ जाएगी,
ये वो सती है जो जिन्दा भी जल जाएगी।
ये वो वज्र है जो इस धरती को मार
गिराएगा, वो किला है, आतंकी जिसका कण छू भी न पाएगा।

ये इसका सिन्दूर ही है जिसने आतंकी ताकत की धज्जियाँ उड़ाई हैं

सोफिया, व्योमिक्या के फौलाद इरादों ने आतंकियों को धूल चटाई है।

स्त्री का सम्मान करो, वो जननी है कल्याणी है,

कमजोर नहीं है औरत!!

वो तो बस थोडी करुणा वाली है।

राजीव
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय
हरसिंहपुरा करनाल

21

लहू से सींची हुई खुशियां

खुशियां तो हर दम है
कभी भाव मे बहती।
तो कभी हमें बहा ले जाती।
लोग शैलों पर चढ़ते।
कोई सरिता के पास रहते,
तो कोई, कश्मीर के स्विट्ज़रलैंड।

खुशियां है, मिलती मुश्किल से,
आई कभी कभार है।
पर किस्मत खराब है,
कि वह 'बाईस' निकली।
आसमान मगन में,
तृणभूमि लहराती।
तूफान से पहले की शांति,
आभास हो जाती।

वे आए,
और जो किया,
उससे लगा कि धर्म तत्व है,
और इंसानियत अतत्व
छब्बीस परिवारों को,
अश्रु मे छोड़ दिया।

क्या किया था?
खुशी ही तो बाटी थी।
वह भी नष्ट कर दिया।

थोड़ी ठंडी सी छाई ।
एक शांति सी महसूस हुई ।
धीमे–धीमे,
बादल सागर पर तिरता,
धीरे से अंधकार छाता,
अग्नि कुंड जग बन जाता।
लह लह करती वह आवाजें।
''शांत न रहना अब,''
निज की अग्नि
अब ठंडी ना हो सकेगी।
क्योंकि यह तो ज्वाला है,
खत्म करने के बाद ही चुप होगी।

एक अंधेरी रात्रि में
उनका चैन बर्बाद किया

मुस्कान आई उन लोगों की
जो थे मासूम,
जो बस खुश होने आए थे।

सलाम करो।
हमारे योद्धाओं को।
जो रात भर ना सोए
और कहते यही–
''यह भू है हमारी।
यह धारा है हमारी
यह गगन हमारा
यह लोग हमारे
यह संसार हमारा
कोई अमूल्य ना आए।
और आए भी तो बच न पाए।
हम झूमे और
हम ही खुशियां मनाए।''

वह कहते हैं ''हम जीते''
पर उनको क्या पता
झूठ के पर थोड़ी ना होते हैं।

कनक
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय,
माउंटेन शैडो, बोरझार, गुवाहाटी,
असम

22

ऑपरेशन सिंदूर

घाटी पर जब वार हुआ, और खून का रंग बह चला,
भारत माँ की आँख में, फिर प्रतिशोध का अंगार जला।
सिंदूर मिटाने की सोची थी, जो भारत की पहचान है,
अब सिंदूर बनेगा ज्वाला, यह वीरों का ऐलान है।

शौर्य की शपथ लेकर उठे, वो भारत के बलिदानी,
न कोई शोर, न कोई हलचल, थी रणनीति की कहानी।
सीमा के उस पार छिपी थी, आतंक की हर दीवार,
ऑपरेशन सिंदूर ने किया, उन ठिकानों पर तीखा प्रहार।

अँधेरी रात में बिजली कौंधी, जब फौलादी पंख गरज उठे,
दुश्मन के हर अड्डे से, बमों के शोले बरस उठे।
हर जख्म का लिया गया बदला, न्याय की धार चली,
हर शहीद की आत्मा को, उस रात शांति मिली।

यह युद्ध नहीं, था उत्तर भारत का, जो धैर्य को कम न समझे,
यह शक्ति का प्रदर्शन था, जो शांति का मूल्य न समझे।
सिंदूर है सुहाग का चिह्न, पर वीरता का भी है नाम,
राष्ट्र–रक्षा में जो लगे, वीरों को मेरा शत–शत प्रणाम !

दीपांशी
ग्रीन फील्ड्स स्कूल, ए–2 ब्लॉक,
सफदरजंग एन्क्लेव, नई दिल्ली

23

कठिन प्रश्न

वो भारत जो थी सोने की चिड़िया कभी,
आज है असहाय, जकड़ी हुई है चुनौतियों में कई।
गरीबी, बेरोजगारी, असमानता और भ्रष्टाचार,
ये नहीं है केवल उदाहरण चार।
बड़ी तस्वीर जब देखोगे,
लगेंगे ये दीमक, जिन्होंने किया है भारत के अस्तित्व पर प्रहार।

वो देश जहाँ बच्चा–बच्चा राम नाम जपता था,
आज भूख के कारण है मौन खड़ा।
सत्य के मार्ग पर कैसे चल पाएगा,
जब पेट भरने के लिए वो चोरी करने पर मजबूर हो जाएगा।
सत्य–असत्य कैसे समझेगा,
जब गलत मार्ग से वह भोजन पाएगा।

मगर क्या ये गलत है?
जब जिन नेताओं को गरीबी मिटानी थी,
वो भ्रष्टाचारी बने खड़े है।
जिनके कल्याण के लिए कार्य करना था,
उन्हीं को लूटने में लगे हैं।
फिर क्या वह बच्चा मजबूर नहीं हो जाएगा
भूख की तड़प में देश का भविष्य, गलत मार्ग पर अग्रसर हो जाएगा।

बेटी–बचाओ, बेटी पढ़ाओं के नारे सुने है हमने कई,
मगर बेटे और बेटी में असमानता
मिटी है कहां आज भी।
ये नहीं कह रही आज केवल बेटियाँ ही यह सह रही हैं,
आज तो यह हालत बेटो की भी हो गई है।
कब खत्म होगी ये तुलना,
कब समानता आएगी,
पूछ रहा है यह संपूर्ण युवा वर्ग
क्या हमारी परिस्थिति ऐसी ही रह जाएगी!
लड़े भी तो किस–किस से,
विरोध करे भी तो कितना,
दिन–सप्ताह–माह नहीं वर्ष बीत गए,
जोशीली पुकार भी मंद पड़ रही
मगर ये समस्या अभी भी है व्याप्त हर कहीं।

पूछो और से नहीं
प्रश्न करो ये स्वयं से,
क्या यही वह भारत है
जिसके लिए पूर्वज थे हमारे लड़े।
अगर जवाब है, नहीं!
तो तुम भी बंधु जाग जाओ
मन में दबी पुकार को अपने जुबां पर लाओ।
तभी तो बदलाव आएगा, देश की काया पलटेगी।
भारत केवल विश्व–गुरु नहीं, पुणः सोने की चिड़िया बनेगी।

प्राची प्रिया
केंद्रीय विद्यालय सीआरपीएफ दुर्गापुर जीसी सीआरपीएफ कैंप दुर्गापुर, अमरावती, पश्चिम बर्धमान, पश्चिम बंगाल

24

ऑपरेशन सिंदूर

वो दिन जो अब भी आखों में आँसू ले आता है,
दिल की धड़कन को तेज कर जाता है।
वह तब की बात है जब हंसी की जगह चीखें थी,
और सिंदूर की जगह खून की बूँदे।

एक माँ ने उम्मीद का दीपक जलाया था,
पर लौटकर आया सिर्फ अँधेरा।
और पत्नी, जिसने सात जन्मो का लिया था फेरा,
वह फेरा रह गया अधूरा।

जब गोलियां चली पहलगाम में,
शहीद हुए बेगुनाह।
खून से खेली होली आतंकियों ने,
और तड़प उठी हमारी भारत मां।

लहराया तिरंगा, गूंज उठी हर गली और मैदान,
जब मोदी जी ने किया ऑपरेशन सिंदूर का ऐलान
हर भारतीय ने साथ दिया उनका,
बदले की आग में जल उठा हर वीर जवान।

भारत की आन है, ये गौरव की मूरत है,
हर भारत की बेटी के लिए, ये प्रेरणा की सूरत है।
सोफिया और व्योमिका, शक्ति का प्रतीक बनकर आई,
भारत की विजय गाथा, दुनिया को सुनाई।

सुप्तिप्रिया साहू
केन्द्रीय विद्यालय नंबर 2 अंगुल
रेलवे कॉलोनी

25

मैं और नदी

ये धरती कैसी अजब निराली
कभी सुनहरी धूप, तो कभी रात काली
मैं बैठा जलपथ सेतु
निहार रहा निश्छल नीर बहत
चाँद के साथ खेलत गावत गुनगुनावत

मैं भी चुप–चाप बैठा गुन गुना रहा
अपने मन का दीपक खुद ही खुद में जला रहा,
नदियाँ कहती राह कठिन हो, चाहे हो सरल
तूफान आएँ, पत्थर टकराएँ, चाहे आए कितनी बाधाएं
फिर भी धार मुस्कराएँ

तारे गवाही देते नभ में
अंधियारे में भी उजाले छिपे है सब में
जैसी नदी हर मोड़ पर है गाती
वैसे ही, जिन्दगी हर पल है मुस्कराती

मैने भी सीखा है. कुछ नदी से
सुख–दुख बस मेहमान है कुछ छड के
जीवन में कैसी भी घड़ी हो
मन प्रसन्न रहे, ऐसी हमेशा उम्मीद जगी हो।

विवेक पाल
डी.पी.एस, सीतापुर रसेरा,
सीतापुर, उत्तर प्रदेश

26

कहा कवि से ऐसी रचना बनाएँ जो ....

कहा कवि से ऐसी रचना बनाएँ,
जो जनहित के मुद्दों पर लय बैठाए।
अवचेतन मस्तिष्क में चेतना जगाए,
तुच्छ चिंताओं को चिंतन में लाए
जो भूले भटके को भी राह दिखाए
कहा कवि से ऐसी रचना बनाए।

कहा कि जो करे अंतरात्मा की आवाज को दृढ़,
जुड़े विचारों से बनी अवधारणाएँ हो सुदृढ़।
कहा कि जो मिटा दे उमंग और अमन के मध्य हो रहे सन्नाटे,
जगा दे जो विश्वास, आशाओं को जरा एक नई पुकार लगा दे।
जो आत्मा में ज्ञान का बोधन करवाये,
कहा कवि से ऐसी रचना बनाएँ।

लो अब इस युग में अनुभव और भावनाएँ भी मशीनी बन जाएँगे।
इसे सृजने वाले सृजन को किसके स्थान पर लाएँगे?
हो जवाब सबका ऐसी पंक्ति रच लाए,
कहा कवि से ऐसी रचना बनाएँ।

सावन कुमार
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय –02
बेली रोड, पटना

27

सपनों को जो हमारे कर दे साकार

यह कल्पना की दुनिया में खो जाने दो कभी,
जिन्दगी में खुलकर उडान भर लेने दो कभी,
यह कल्पना की दुनिया में खो जाने दो कभी।

यह जीवन कल्पनातमिक है,
यह जीवन कल्पनातमिक है,
इसे मुक्त नभ में विचरण कर लेने दो कभी,
यह कल्पना की दुनिया में खो जाने दो कभी।

कल्पना रचनात्मक है,
कल्पना रचनात्मक है,
जगत के लिए तो यह स्नेह का प्रतीक है,
स्नेह के इस झरने को संसार में बह जाने दो कभी,
यह कल्पना की दुनिया में खो जाने दो कभी।

दिल है छोटा, छोटी है आशा
पर विशाल कल्पनातमिकता की मन में है अभिलाषा,
इस अभिलाषा को मंजिल तक ले जाने दो कभी,
यह कल्पना की दुनिया में खो जाने दो कभी।

कल्पना के पंखों पर हो कर सवार,
इस ब्रह्मांण में बांट लेने दो बहुत सारा प्यार,
साहस और कल्पना दोनों है पास,
साहस और कल्पना दोनों है पास,
सपनों को जो हमारे कर दे साकार
सपनों को जो हमारे कर दे साकार

मानवी राठौर

लक्ष्मी तारा राठौर सीनियर सेकेंडरी स्कूल, सियालवा माजरी

28

वह खिड़की

खिड़कियां रोज खुलती है,
खिड़कियां रोज बंद होती है,
रोज नए नजारे आते हैं,
पर क्या कह कर चले जाते हैं?

एक बार अवलोक बाहर
पेड़ खड़े हैं अपार,
पीछे दो राहो का वितर,
एक कांटों का, दूसरा पत्थर।

वर्षा आती है, हरियाली कर जाती है,
गर्मी आती है, सुखा कर जाती है,
प्रकृति का एक भाव है – बदलाव
इसीलिए बुलबुल गाती चली जाती है।

साक्षी
एपीजे स्कूल खारघर
सेक्टर 21, खारघर नोड,
नवी मुंबई, महाराष्ट्र

29

ऑपरेशन सिंदूर

दुष्ट बैरी दुश्मन
था नशे में चूर,
बेनेक इरादे उसके
कुलक्षण थे भरपूर।

चाल चली कुचाल
हुई बहनें बेजार,
हृदय हुआ छिन्न छिन्न
कलेजा तार तार।

देश पर आँच थी
बदकारी का नाम,
पापी ने दिखा दी
औकात पहलगाम।

देश प्रथम, महान
उठा शूर जरूर,
चक्रदमन चलाया
चक्रपाणि सिंदूर।

अन्वेषा रघुवंशी
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय चौरई, सोयाबीन पंत पोस्ट मार्कहाण्डी के पास, चौरई, छिंदवाड़ा

30

धरती की पुकार

हे मानव! अपनी मां की पुकार सुनो।
धरती मां की पुकार सुनो!
हमारी करनी पर मौन है नदियां खड़ी,
कटते वन, बंजर धरती, है ये विपदा बड़ी।
प्रदूषण से हैं घुटते पंछी सारे,
पवन में धुआं फैला है चारों धारे।

लालच राज कर रहा सभी के सिरों पर,
प्लास्टिक ने है ढकी हरियाली की चादर।
तपती गर्मी से पिघलते हिमशिखर हैं,
सूखे उपवन, सूखे बगीचे, सूखे खेत
–खलिहान हैं।
और जब मेघ हैं बेमौसम बरसते,
डूब जाती हैं लहरों में बस्तियां, लोग गरीबी
में हैं तरसते।

समय है फिर भी संभल जाओ,
अपनी मां, धरती को इतना मत सताओ।
एक बीज मिट्टी में भरकर,
हर पानी की बूंद बचाओ।
नदिया निर्मल बहने दो धारा में,
वन की हरियाली को लहराओ।

प्रकृति ही है ईश्वर का रूप,
इसमें बसा है हर जीवन का स्वरुप।
धरती की रक्षा ही है पूजन महान,
इससे ही लौटेगा वसुंधरा का सम्मान।
हे मानव! अपनी मां की पुकार सुनो।
धरती मां की पुकार सुनो!

माही जोशी
सन्मती उच्च माध्यमिक विद्यालय,
आवासीय क्षेत्र, इंदौर, मध्य प्रदेश

31

कैनवास की बातें

कैनवास पर जब रंग बिखरते
सपनों को आकार मिलते।
एक छोटी सी रेखा से ही,
हजार जज़्बात निकलते।

रंगों में छुपे हैं दुख सुख,
जो कहे बिना रह जाते।
चेहरे पर हँसी दिखे सबको,
पर दिल के तूफान छुप जाते।

चित्रकार की मेहनत चुपचाप,
कोई आसानी से न समझे।
हर चित्र में उसका दिल धड़कता,
हर रंग में उसकी साँसें बसें।

वेनुमु मीरा सहस्र
पी एम श्री केन्द्रीय विद्यालय,
गोपन्नापलेम, एलुरु

32

संविधान तो रचा

पर उस पर अमल कौन करेगा?
उस दो साल की मेहनत को
सफल कौन करेगा?
खटखटा न्याय का दरवाजा तू, बुलंद कर आवाज
ना रहा अब कोई जो करेगा तुझपे राज!
घुट–घुट के जीने के वो साल निकल गए,
सिर हमारा नीचे था तो हालात थे बिगड़े।
खटखटा न्याय का दरवाजा तू, बुलंद कर आवाज
आवाज बुलंद कर ली?
अब कर खुद पर नाज,
ना जो तू कर पाया
हो मत निराश!
बस आँखें बंद कर और यह याद करता जा,
जो आज तू कदम बढ़ाएगा
भारत को बेहतर कल दे पाएगा।
जो बात तू नजरों से बताएगा तो
कोई नजरें नहीं चुराएगा,
जो आवाज तू उठाएगा, तो
कोई बोलने से न कतराएगा।
तू हारेगा नौ बार, पर दसवीं बार जीत जाएगा!

अनन्या पाठक
डीएवी सेंटेनरी पब्लिक स्कूल, पश्चिम एन्क्लेव, नई दिल्ली

33

सड़क सुरक्षा

सड़क बनी है लम्बी चौड़ी,
इस पर जाए मोटर गाड़ी।
बच्चो सड़क पार जब करना,
इतनी बात ध्यान में रखना।
जब भी निकला करो सड़क पर,
थोड़ा धीरे निकला करो सड़क पर।
जब जब सड़क साफ दिख जाए,
मोटर – गाड़ी ना नजर आए।
तभी करना सड़क पार,
कहलाओगे तुम होशियार।
जन–जन की है यहीं पुकार,
कोई न हो सड़क दुर्घटना का शिकार।

श्रीयांशु सेखर साहु
पीएम् श्री केन्द्रीय विद्यालय, ओडिशा

34

ऑपरेशन सिंदूर

कुछ लोग थे बुरे वह पाकिस्तान से,
जिन्होंने एक स्त्री का सिंदूर मिटा डाला।
लगा खून एक देश प्रेमी का पहलगाम की धरती पर,
जिसने नया इतिहास बना डाला।
दूर किया जिस माँ से उसके बेटे को
उसका बदला आज हमारा भारत लेगा,
इस धरती पर गिरे एक–एक आँसू का बदला खून से लेगा।
धर्म पूछकर मारा था उन्होंने इतना सा भी तरस जताया तक नहीं,
पर यह बात कभी मत भूलना कि आज तक किसी ने हमारा भारत हराया तक नहीं।
क्या कसूर था उस देश प्रेमी का जिसने तेरी गोली से शहादत को अपना लिया?
तू क्या जाने कीमत उस सिंदूर की जिन्होंने अग्नि द्वारे सात फेरे लेकर हमेशा साथ रहने का वचन दिया।
एक दिन जब हो जाऊँगी मैं बड़ी,
करना है अपने देश के लिए सुरक्षा का काम।
न कोई माँ खोएगी अपना पुत्र और न ही होगा किसी स्त्री के सिंदूर का अपमान।

राजबीर कौर
लक्ष्मी तारा राठौड़ पब्लिक स्मार्ट स्कूल, मोहाली, पंजाब

35

"स्वच्छ भारत का आधार– नागरिक शिष्टाचार"

नजर में आई है हमारे देश की सबसे बड़ी बीमारी,
हर तरफ कचरा और गंदगी पड़ रही है हम पर भारी।
हम चाँद पर पहुंचे, मंगल यह निशान,
पर जमीन पे गंदगी, क्या यह रह गई हमारी पहचान?
विदेशी आते हैं जब यहाँ, कैसी छवि ले जाते वहाँ?
क्या यही है संस्कार महान, जहाँ गदगी हो हर स्थान?
चलो मिलकर बदलें अब यह चाल, हर गली बनाएँ मिसाल ।
शुरुआत करेंगे डिब्बे में फेंककर कचरा सीधा,
साफ हो जाए हर रास्ता और सीमा ।
नागरिक बनों, मगर सिर्फ नाम के नहीं,
अपने कर्तव्यों को निभाओं, कार्य कर के सही।
चलिए सही कदम उठाएँ, छोटे–छोटे नियम जीवन में अपनाएँ,
क्यूँ न प्लास्टिक का प्रयोग तुरंत घटाएँ,
और अधिक पेड़ लगाकर हवा को शुद्ध बनाएँ।
सर्वत्र स्वच्छता रखने के लिए सदा आगे आएँ,
और दिखा दें जमाने को स्वच्छ भारत की सभी दिशाएँ।
अब याद रखें – स्वच्छता बने भारत की पहचान,
क्योंकि जीवन का वास्तविक मूल है नागरिक शिष्टाचार।

अमायरा कपूर
टैगोर इंटरनेशनल स्कूल, वसंत विहार, नई दिल्ली

36

'कविता – सूरज चाचू'

सूरज चाचू दूर से,
क्यूं देख रह हो घूर के,
पूरी धरती झुलस रही है,
थोड़ी रहम दिखाओ ना
कुछ दिन की तुम छुट्टी ले लो,
कुल्फी लस्सी ठंडा पी लो,
ये गर्मी में तुम भी अपनी नानी के घर जाओ ना,
सैर सपाटा कर के फिर तुम सर्दी में आ जाओ ना।

आरव मिश्रा
पी.एम. श्री केन्द्रीय विद्यालय
नं.–03, झाँसी

37

ऑपरेशन सिंदूर

जब घाटी में छाई, गम की काली घटा,
और सिंदूर मिटाकर, दुश्मन ने दी सजा।
तब ज्वाला उठी दिल में, हर जवान के भीतर,
कहा, हिसाब चुकाएगे, अब नहीं करेंगे फिक्र।

नाम पड़ा सिंदूर पर, इरादा था ये अटल,
दुश्मन की हर साजिश को, कर देंगे अब विफल।
रात के सन्नाटे में, गरजे जब मिग हमारे,
छिपने की जगह ढूँढी, डरपोक दुश्मन बेचारे।

वो लाल रंग सिंदूर का, जिसे कमजोरी समझा था,
वही बना त्रिशूल अब, जो काल बन के गरजा था।

हर बंकर दहा उनका, हर अड्डा हुआ राख,
हमने जीत की लकीर खींची, हर दुश्मन हुआ खाक।

ये सिर्फ कार्रवाई नहीं, ये राष्ट्र का सम्मान था,
हर माँ का आशीर्वाद, हर शहीद का अरमान था।
गर्व से कहो वीरो। तुमने इतिहास रचा है,
'ऑपरेशन सिंदूर' ने, दुश्मन को धूल चटाया है!

जय हिंद! जय भारत!

आरुशी सिंह
पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय सुंदरगढ़, ओड़ीसा

38

ज्ञान का दीप

ज्ञान की दुनिया में एक दीप जलता है,
बौद्धिकता का सम्मान हर जगह होता है।
हर विचार, हर रचना, हर नई खोज,
है मानव की मेहनत, उसकी सच्ची ओज।

कलाकार की आँखों में चमक अनमोल,
वैज्ञानिक की खोजें देती हैं समाज को रोल।
हर नया विचार, हर नई रचना,
है समाज की शान, देश की पहचान ।

अगर चोरी हो जाए किसी की मेहनत,
तो गुम हो जाएगा भविष्य का प्रकाश।
ज्ञान केवल शब्द नहीं, है ये अधिकार,
इसे बचाना है, ये है हमारी उध्दार।

हर लेखक, हर कलाकार, हर वैज्ञानिक की मेहनत,
नहीं जाया करती व्यर्थ, होती है सच्ची जीत।
आओ हम सब मिलकर इसे अपनाएँ,
हर नवाचार को सुरक्षा और मान दें।
सृजन की आग कभी न बुझने पाए,
ज्ञान का दीप हमेशा जलते जाए।
विचारों की रक्षा है समाज की पाठ,
इनोवेशन से बढ़ेगा हर हाथ।

नई पीढ़ी को ज्ञान का महत्व समझाएँ,
बौद्धिक संपदा का सम्मान करने की आदत डालें।
हर कोई अपने विचारों को सुरक्षित रखे,
और दूसरों के अधिकारों का सम्मान करे।

साक्षी नायक
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय, नं.–5, भुवनेश्वर, ओड़ीसा

39

सिंदूरः हिंदुओं का बदला

''अनचाहा हमला हुआ,
निर्दोष पुरुषों का खून बहा,
पत्नी–बच्चों की आँखे रो पड़ी,
कैसे उनकी छुट्टियों की खुशी मिट गई,
कभी न सोचा था यह दिन इतना डरावना बनेगा,
इतना भयानक कोई सपना सजेगा।

आर्मी सैनिक बनकर आए आतंकी,
निकले विनाशकारी, खूनी, जालिमी
हिंदुओं को गोलियों से मारा गया,
शांति का दीपक बुझ गया।
न्याय की खोज हर ओर थी,
धरती पर आतंकियों की मारे जाने की तोड़ थी।

भागने का न कोई रास्ता बचा,
हर कोई भय से काँप उठा।
परिवार संग आए पतियों का वध हुआ,
क्रोध में 'सिंदूर' नामक अभियान चला।
22 अप्रैल को कोई न भुला पाएगा,
यह घाव इतिहास में गहरा रह जाएगा।

पैरिसा
ग्रीनलैंड सीनियर सेकेंडरी पब्लिक स्कूल,
लुधियाना

40

"मेरी कविता"

मेरा भारत महान।
आन–बान–शान है इसकी पहचान।
पहले किसी पड़ोसी से करता नहीं छेड़खानी।
लेकिन कोई आँख दिखायें तो याद दिला देता है नानी।
धर्म पूछ–पूछ कर कुकृत्य किया तो प्रतिशोध भी जरूरी था।
ऐसे जंगली कुत्तों की हरकत पर सबक सिखाना भी जरूरी था।
ऑपरेशन सिंदूर समय की मांग था।
उन छब्बीस बेकसूर चिताओं के सम्मान का प्रतीक था।
यह तो मात्र ट्रेलर था, पूरी पिक्चर तो अभी बाकी है।
सुन ले ए पाकिस्तान, जब भारत की सेना बरसेगी।
तो पाकिस्तान की लाशें कंधों को तरसेगी।
"जय हिन्द"

चेष्टा जांगिड़
डुंडलोद पब्लिक स्कूल,
सीतसर, झुंझुनू (राजस्थान)

41

उड़ान हिन्दुस्तान की

ना झुका है तिरंगा कभी आँधियों के सामने,
ना रुका है भारत कभी मुश्किलों के सामने।
भारत ऐसा देश है जो केवल नक्शे पर नहीं सजता,
हर भारतीय की धड़कन में बसता है।

वो दिन जब चर्खा चला और बापू ने राह दिखाई,
लाठी नहीं, सत्य की शक्ति से आजादी की लौ जलाई।
झाँसी की रानी, भगत सिंह की पुकार,
हर दिल में बसता था तब स्वतंत्रता का विचार।

लाल किले से गूंजी थी, नेहरू की पुकार,
"तिरंगा अब हमारा है" था वह स्वप्न साकार,
हर खेत में हरियाली थी, हर हाथ में काम,
देश बना था तब उम्मीदों का, संघर्षो का नाम।

धरती हमारी माँ है, तिरंगा हमारी शान,
जिस आजादी को खून से सींचा गया, वह हमारा अभिमान।
स्वतंत्रता कोई मोल नहीं, वह अनमोल उपहार है,
जिसकी कीमत वीरो ने अपने रक्त से चुकाई है।

कारगील की चोटी पर जो तिरंगा सजा था,
वह केवल वायु से नहीं, हर शहीद की साँसों से लहरा था।
ना डर था, ना झुकना मंजूर था,
भारत के वीरो का यही दस्तूर था।

ऑपरेशन सिन्दूर था शौर्य की मिसाल,
हर वीर ने अपना राष्ट्र धर्म निभाया बेमिसाल।
जब बढ़ती है भारतीय सेना रणभूमि की ओर,
ना थकते हैं, ना झुकते हैं,
शौर्य ही है उनका धर्म और विजय ही है उनका लक्ष्य।

यह यात्रा है, जमीन से आसमान तक,
एक विकसित, आत्मनिर्भर भारत की पहचान तक।
विश्व मंच पर भारत की पहचान, नेतृत्व में है इसकी महानता की जान।

जय हिन्द

अदिति बाबासाहेब दांगट
एयर फोर्स स्कूल, चंदननगर, पुणे

42

ऑपरेशन सिंदूर

जब हुआ ऑपरेशन सिंदूर, तो गिड़गिड़ाया पाकिस्तान,
छिप गए आंतकवादी, जब हुई जेट की बौछार।
चली जब ब्रह्मोस, तो थरथराया पाकिस्तान,
किया अटैक एस–400 ने, तो घबराया पाकिस्तान।
ले चली सोफिया फाइटर जेट, तो मिमियाया पाकिस्तान,
छोड़ा न आतंकवादी को, तो डूब गया पाकिस्तान।
जब चला युद्धपोत समुद्र से, तो हार गया पाकिस्तान।
युद्धपोत ने मारा, तो सरेंडर हुआ पाकिस्तान।

निहारिका बगड़िया
डूंडलोद पब्लिक स्कूल, डूंडलोद, झुंझनू, राजस्थान

43

शिक्षा सफर

अतीत का अंकुर

वह गुरुकुल की धारा, ज्ञान की पहचान,
अनुशासन से ही बनता था इंसान।
अनुभव से मिलती थी सच्ची शिक्षा,
जीवन बनता था पावन दीक्षा।

वर्तमान की फसल

अब शिक्षा बन गई अंक का जाल,
डिग्रियाँ मिली पर सपनों का हाल।
प्रतिभा दबी है बाजार की भीड़ में,
हर युवा के मन में उलझन की पीड

बदलाव का मौसम

अब शिक्षा का हो, नया अवतार
कौशल से ही होगा सबका उद्धार
विज्ञान के साथ जब तकनीक चले,
हर युवा को उसकी मंजिल मिले।

भविष्य का फल

जब ज्ञान की ज्योति से सँवारे हर राह,
मिट जाए गरीबी पूरी हो हर चाह।
युवा जब आत्मनिर्भरता का मार्ग अपनाए,
विश्वगुरु भारत बन जग को चमकाए।

अंत की पुकार

ज्ञान और हुनर की हो जब सच्ची साधना,
पूरी होगी हर मन की कामना।
नई शिक्षा से जब खिलेगा हर सवेरा,
बनेगा भारत फिर विश्व का उजियारा।

अनुष्का संदेश कान्हेड़कर
विद्या प्रतिष्ठान अनंतराव पवार इंग्लिश मीडियम स्कूल, चिंचोली, ताल डौंड, जिला, पुणे

44

काश मैं भी लड़का होती

बात नहीं सिर्फ ये आज की,
कथा ये पुराणों से चलती आती,
हर लड़की को ये दुनिया ये महसूस कराती–
कि काश मैं भी लड़का होती।

कहते हैं– लड़का–लड़की सब एक समान,
दोनों में नहीं कोई अंतर,
फिर क्यों आज भी उसके कपड़ों को
दिया जाता है दोष?
रोती है वो चुपके रात भर।

कहते हैं– नारी है देवी स्वरूप,
परंतु रामायण से लेकर कलियुग तक,
समाज कलंक सिर्फ नारी पे ही क्यों लगाता,
समझ नहीं आया ये आज तक।

रात को बाहर मत जाना,
खुद को ढँक कर रखना,
फिर भी जब होता है किसी नारी का
बलात्कार
''क्या पहना था?''–ये क्यों पूछता है संसार?

लड़कों से बात की – तो चरित्रहीन,
न की – तो कहलाए डरपोक।
कहाँ गई? क्यों गई? सब जानकर भी,
क्यों करते हो इतना रोक–टोक?

कहकर कि ''घर की लक्ष्मी तू''
खुद को एक बोझ की तरह उसे महसूस
कराते।
कि ये सोच कर वो भी रो देती,
कि काश मैं भी लड़का होती,
काश मैं भी लड़का होती।

अनन्या प्रियादर्शिनी महुंता
एपीजे स्कूल, भुवनेश्वर

45

समसामयिक मुद्दें

भीड़ बढ़ी है शहरों में,
दिल खाली है घरो में।
तरक्की की सीढ़ी चढ़ते हम,
पर गिरते इंसानियत के तराजू में।

बेटी आज भी सवाल करे,
कब सुरक्षित हर हाल रहे?
मोमबत्तियाँ जलती चौराहों पर,
पर अंधेरे दिलों में पल रहे।

नदी का पानी काला हुआ,
पेड़ों का जंगल आधा हुआ।
प्रकृति पुकारे हर पल हमें,
बचाओ अब, वरना क्या होगा?

युवा डिग्रियों में भरे हुए,
फिर भी काम से खाली हुए।
बेरोजगारी की आँधी में,
सपने बिखरे हैं छाले हुए।

नेता भाषण बड़े करें,
वादों के दीपक खड़े करें।
पर सच की राह अगर पकड़ लें,
तो जनता का विश्वास जुड़े।

डिजिटल युग में दौड़ रहे,
स्क्रीन से रिश्ते जोड़ रहे।
पर आँखों में थकान बहुत,
दिल से दिल अब तोड़ रहे।

अब जागो भारत के नौजवान,
बदल दो समाज, बढ़ाओ मान।
शिक्षा, समानता, पर्यावरण संग,
नया उजाला होगा प्रखर रंग।

संदेशः
समसामयिक मुद्दें हमें यह याद दिलाते हैं कि विकास केवल इमारतों और तकनीक से नहीं होता, बल्कि न्याय, समानता, शिक्षा, महिला सुरक्षा और पर्यावरण की रक्षा से ही एक सच्चे 'नए भारत 'का निर्माण होगा।

दिव्यांशी राय
वाराणसी

46

मेरा मन

मेरा मन उड़ता रहता,
मम्मी उसको नीचे लाती,
कभी पढ़ाती, कभी खिलाती,
प्यार से सब कुछ सिखलाती।
कभी डाँट कर समझाती,
कभी हँसकर मुझे बहलाती है,
मेरे सपनों की उड़ानों में,
मेरा साहस बढ़ाती है।
उनकी गोदी बादल जैसी,
उनकी बातें दीपक जैसी,
मन जब भी थककर बैठे,
उनकी छाया सुख बन जाती।
मेरा मन उड़ता रहता,
मम्मी उसको नीचे लाती।।

इतिशा रस्तोगी
संस्कृति स्कूल वाघोली कैंपस,
पुणे, महाराष्ट्र

47

ऑपरेशन सिंदूर : वीरता की लालिमा

जब माँ के आँचल पर आँसू ढले,
वीरों ने कसम खाई, कदम न डगमगाएंगे भले।

"अन्याय अब और नहीं सहेंगे,
रक्त का उत्तर साहस से देंगे।"

सिंदूरी नभ में रणघोष गूंजा,
धरती माँ ने बेटों को पुकारा।
ये केवल एक अभियान नहीं,
रक्तिम संकल्प का प्यारा सहारा।

सिंदूर है नारी का श्रृंगार,
पर रणभूमि में ज्वाला अपार।
ये प्रेम का प्यारा प्रतीक है,
और अन्याय पर प्रहार का संगीत है।

जब पहलगाम की पीड़ा ने जगाया,
भारत ने सिंदूरी दीप जलाया।
रणभेरी बज उठी, नभ काँपा,
वीरों का साहस सागर–सा छाया।

हर कदम पर गूँजा नारा,
"भारत माता अमर है" प्यारा।
हर सांस में संकल्प यही,
"अन्याय मिटेगा धरती से सभी।"

गोली की गर्जन में छुपा संदेश,
"हम शांति के पुजारी हैं विशेष।
पर रणभूमि में यदि धर्म पुकारे,
तो अर्जुन बन तीर भी चलाएँ।"

सिंदूरी यह गाथा सुनाएगी,
आने वाली पीढ़ी को बताएगी।
जहाँ विश्वास और परिश्रम मिलते हैं,
वहीं इतिहास के दीप जलते हैं।

जब कोई पूछे, "सिंदूर क्या है?"
उत्तर गूँजे भारत के स्वर में यह,
"यह केवल श्रृंगार नहीं, बलिदान है,
शौर्य की लालिमा, भारत की जान है।
यह है अमर आत्मा की निशानी,
माँ भारती की अमर कहानी।"

लक्षिता गुप्ता

दिल्ली पब्लिक स्कूल,
पुणे, महाराष्ट्र

48

बच्चे अब

बच्चे अब बच्चों से नहीं दिखते,
मासूम अंजान पुतलों से नहीं रहते।
आशा निराशा से कोसों दूर हैं,
उन्हें सब है पता क्या सही क्या गोलमगोल है।
जिज्ञासा जो भी गूगल से पूछ लेते हैं,
सपनों को पूरा करने का प्लान पहले से ही कर लेते हैं।
ज्ञान का भंडार हैं ये,
हर सवाल का तुरंत जवाब हैं ये।
थपकियों से सुलाना नामुमकिन इन्हें,
चाँद सितारों से सीधा नाता जोड़ते हैं ये।
उत्तेजना इतनी जैसे, उमड़ रहा सैलाब हो,
अगले ही पल शांत इतने, जैसे खिलता गुलाब हो।
बचपन कहाँ इनका लगी होड़ है,
खेल खिलौने नहीं, बंद घरों में फोन है।
काश हमारे समय सा इनका बचपन होता,
ऑनलाइन नहीं, ऑफलाइन सच्चा संग होता।
स्मार्ट दुनिया में तैयार होते स्मार्ट बच्चे हैं,
टेक्नोलॉजी के पास और समाज से दूर, मन से अभी कच्चे हैं।
बच्चे अब बच्चों से नहीं दिखते,
मासूम अंजान पुतलों से नहीं रहते।

युक्ता अरोड़ा

भारतीय विद्या मंदिर
सीनियर सेकेंडरी स्कूल,
लुधियाना

49

कागज

आजकल कुछ ठीक नहीं लगता,
क्यों लगता शोर चारों ओर?
बढ़ रहे है बिजली–पानी सबके रेट,
अब क्या करेंगे आम लोग अनेक?

बढ़ती महँगाई ने मचाया बवाल है,
जैसे आया कोई भुचाल है।
वजह इसकी हर कोई जाने,
पर ढूँढे न समाधान कोई।

महँगाई की तो छोड़ो बात,
प्रदूषण ही है हर समाचार।
प्रदूषण ने की हवा जहरीली,
किया गंदा है नदियों को।
काटे गए वृक्ष है,
जो दे हमें दाना–पानी।

सोशल मीडिया पर रील देख हँसे,
पर दिल में रखें खालीपन।
असली रिश्ते खोए लगते,
लगता है रह गया केवल दिखावापन।

सड़कों पर भी डर से चलें,
समझे खुद को आज भी असुरक्षित।
डॉक्टर हो या हो अध्यापिका,
हर महिला का यही है डर,
हो जाए कुछ गलत।
क्या यही है आजादी की सच्ची परिभाषा?

मैं चाहती हूँ कि जागे सब,
दे ध्यान मेरे हर विषय पर।
मिलेगा हर समस्या का समाधान,
जब मिलकर करेंगे काम हम सब।

सहजप्रीत कौर

लक्ष्मी तारा राठौड़ पब्लिक स्मार्ट सेकेंडरी स्कूल
सियालबा माजरी

50

भ्रष्टाचार

क्या अभी भी बचा है उन नेताओं में स्वाभिमान?
थोड़ी सी प्रतिष्ठा और मर्यादा का मान?
वह जो थके नहीं भ्रष्टाचार का पालन कर,
और जी रहे हैं लालच को बनाके अपना घर।
गरीबी, चोरी, सुरक्षा जैसे विषयों को छोड़,
जात–पात और धर्म को रहे हैं मरोड़।
पैसों का कीड़ा जो काटा है इनको,
यदि वह समर्पित होता ईमानदारी को,
तब व्यापारित न होता जनता का भाव,
और वह न पहुंचाते उनको घाव।
अब समय है उठने का,
नेताओं को उनके कुकर्मों की सजा देने का।
सरकार को विकृत जनों से मुक्त कराने का,
समाज को सुधारने का।
जब उठाएगा स्वर एक साथ यह संसार,
तभी ख़तम होगा यह अपार भ्रष्टाचार।

आरुषि गुप्ता
टैगोर इंटरनेशनल स्कूल,
वसंत विहार, नई दिल्ली

51

विचारों की उड़ान, सीमाओं से परे

सपनों की चिड़ियाँ, खुली हवा में गाएँ,
अनदेखी राहों पर, नई दुनिया दिखाएँ।
डर को तू छोड़, मन को आजाद कर
अपनी कल्पना को तू आबाद कर।
सृजन की ज्योति जला मन में
खुशी के रंग भर जीवन में।

जब विचार होते हैं बंधनमुक्त
बन जाते हैं वो शक्ति अद्भुत।
सीमित नहीं हैं मानव की क्षमता,
बना सकते हैं वो नई सभ्यता।

नया जगत, नया निर्माण,
मन में बसे एक बेहतर इंसान।
विचारों की उड़ान, अनंत उड़ान,
बदल दे ये सारा जहान।

मन की शक्ति को पहचानो तुम,
नई राहों पर बढ़ो तुम।
कल्पना की दुनिया है तुम्हारी,
बनाओ इसे तुम सबसे प्यारी।

मन मेरा एक खुला आकाश,
विचार मेरे पंछियों का वास।
उड़ते हैं ये सब ऊँचे आसमान,
तोड़ के सारी दुनिया जहान।

मन की शक्ति को पहचानो तुम,
नई राहों पर बढ़ो तुम।
कल्पना की दुनिया है तुम्हारी,
बनाओ इसे तुम सबसे प्यारी।
विचार मेरे पंछियों का वास।
उड़ते हैं ये सब ऊँचे आसमान,
तोड़ के सारी दुनिया जहान।

कीर्तिका नोंगमेंकापम

केंद्रीय विद्यालय, नं.–1,
इम्फाल, मणिपुर

52

की नई कविता कैसी हो?

की नई कविता कैसी हो?
यह प्रश्न कहीं अंदर से है
पुराने दिनों जैसी हो या
नई विधाओं की जननी हो
व्यथाओं की कहानी हो या
जीवन में स्थाई हो
जैसी भी हो
पर कुछ क्षणों में
बस हमारी अपनी हो।
कामगार की रोटी या
कमरों की बंद खिड़की हो
इन सब पर लिखा जा सकता है
पर क्या सबको अपनाया जा सकता है ?
नारों की तकरीर से
हर जेब तक बात
नहीं पहुंचती हैं।
और नहीं लिखने से
आत्मा सुखी हो जाती है
की कभी काल
जरूरत आत्मा से
ज्यादा महंगी होती है
उस वक्त यह बातें
हर
आदमी से कोसों दूर बिछड़ती हैं।
भूख से
कविता दूर ठहरती है
भीखमंगों के लिए
दुनिया बस
एक नाच बनी रहती है

इसलिए नई कविता जैसी भी हो
और जहां से भी हो
पर कहीं अपने अंदर से हो
और
किसी अपने से हो।

अविनाश सिंह
संत अतुलानंद कॉन्वेंट स्कूल,
वाराणसी, उत्तर प्रदेश

53

सृजन की लौ

कितनी रातें गुजरी हैं जागकर,
कितनी आँखें सूजी हैं रोशनी तलाशते हुए।
कभी किताब के पन्नों में,
कभी प्रयोगशाला की नमी में,
कभी किसी कवि के टूटे हृदय में —
जन्म लेता है सृजन।

वह गीत जो गाया नहीं गया,
वह चित्र जो अधूरा रह गया,
वह औषधि जिसने जीवन बचाया —
सबके पीछे
किसी का श्रम, किसी का सपना,
किसी का मौन त्याग खड़ा है।

सोचो, यदि वह सपना
चुरा लिया जाए
बाजार के कोलाहल में,
तो यह अन्याय
कितना गहरा होगा —
जैसे माँ की लोरी
किसी और के नाम हो जाए।

बौद्धिक संपदा केवल कानून नहीं,
यह तो आत्मा का कवच है,
जिसे पहनाकर हम
नवाचार को सुरक्षित रखते हैं।

पेटेंट, कॉपीराइट, ट्रेडमार्क —
ये सब हैं दीवारें,
पर दीवारें नहीं,
सुरक्षा की मीनारें हैं,
जहाँ सृजन की लौ
बुझने नहीं दी जाती।

आज जब दुनिया
एक गाँव बन चुकी है,
तो हमारी जिम्मेदारी और भी बढ़ी है —
कि हम हर सृजन का सम्मान करें,
हर विचार को उसका अधिकार दें।

क्योंकि याद रखो,
यदि बौद्धिक संपदा बचेगी,
तो ही रचनाएँ जिएँगी।
और यदि रचनाएँ जिएँगी,

तो ही मानवता का हृदय
धड़कता रहेगा।

आओ, यह प्रण लें –
हर श्रम को उसका नाम देंगे,
हर सृजन को उसका सम्मान देंगे।
तभी तो यह सभ्यता
दीपशिखा–सी जलती रहेगी,
और आने वाली पीढ़ियाँ कहेंगी –
"हाँ, हमने अपने सृजनकर्ताओं को
न्याय दिया है।"

श्रेयश यादव
पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय झाँसी,
उत्तर प्रदेश

54

सपनों की ज्वाला

धुएँ से ढका है मेरा शहर,
अब तो सासों में भी बस गया जहर।

नेताओं के वादों का अब क्या होगा असर,
जनता के दिल में अब बस गया कहर।

भूख से जूझता करता सफर,
रोटी को तलाशता उम्र भर।
सपनों का दीया बुझा कर आगन,
न्याय का मिला ना कोई साधन।

नेताओं के वादे, ऊँचे–ऊँचे
विकास के वादे, परंतु टूटे
जब पेड़ कटे, तो बादल भी रूठे
वादों के महल सब झूठे,
सच की आवाज दबा दी जाए,
झूठ और लालच सब ओर छाए
महंगाई ने खाया घर का सुख,
रोज की जिंदगी में बड़ा दुख।

फिर भी अंधेरे में उजाला है,
जनता के दिल में चमकती एक ज्वाला है।

आओ मिलकर एक कदम बढ़ाएं,
सपनों का भारत साकार बनाए।

अरीबा मैराज
पी.एम. केन्द्रीय विद्यालय
रेलवे हरथला कॉलोनी

55

स्वच्छता हमारे ख्वाब

स्वच्छ रहे हम रोज सुबह,
झाड़ू उठाए करे सफर
कूड़ा डाले डिब्बे में,
स्वच्छता अपनाएं जीवन में।

स्वच्छ हवा और नीला गगन,
स्वच्छ हो पृथ्वी हर क्षण
बच्चे, बूढ़े, नौजवान
सब मिलकर ले ये प्रण

स्वच्छता में है शक्ति भारी,
यह है सच्ची सेवा हमारी
आओ मिलकर काम करें
भारत को हम स्वच्छ बनाएं

बदलें ख्वाब को सच्चाई में
हटाएं सुस्ती जीवन से
करें प्रेम स्वच्छ भारत से
बनें जिम्मेदार जीवन में!

दित्सा नांबियार सी पी
पी एम श्री केन्द्रीय विद्यालय
कन्नूर – केरल

56

समसामयिक मुद्दे

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ
का सब ने नारा लगाया,
अपने बेटों को भी समझायो
जिसने किसी का जीवन जलाया।

कहते हैं तुम्हें हम बचाएंगे
फिर बाद में वही उंगली उठाएंगे,
करना चाहे सपने पूरे तो
हाथ से निकल गई कहलाएंगे।

थोड़ी सी आवाज उठाई तो कहते
लड़की बिगड़ गई है,
एक बार सोच कर तो देखो
समाज की कैद में सिकुड़ गई है।

सोच बदलो, आवाज उठाओ
इस समाज को बेहतर बनाओ,
जिसे घर की इज्जत कहते हो
उसकी मिलकर इज्जत बचाओ ।

परनीत कौर
लक्ष्मी तारा राठौर पब्लिक सीनियर सेकेंडरी स्कूल, सियालबा – माजरी

57

"उपेक्षित शेर की दहाड़"

लड़का हूँ मैं, आग का गोला फटता,
लडकियों की प्राथमिकता से दिल जलता –कट्ता!
क्यों सिर्फ वो ही सशक्त, हम क्यों भुलाए?
उपेक्षा की आग में, मैं अब दहकता – उबलता!

आंसू मेरे, जज़्बात मेरे, क्यों दबाए जाते ?
''मर्द बन'' की चींखों से हम क्यों सताएं जाते?
अब विद्रोह की आग, दिल में सुलगाउंगा,
हर रूढ़ि को चीर, नया इतिहास लिखवाऊंगा!

कहते हैं ''बेटी बचाओ – बेटी पढ़ाओ,''
पर बेटों की आवाज, कहाँ दबा दी सारी?
कल सौरभ राजपूत, आज राजा रघुवंशी की बारी,
कभी 'मुस्कान' कभी 'सोनम' ने की गलती भारी!!

दुनिया झुक जाएगी, मेरी दहाड़ से कापेंगी,
लड़के – लडकियां बराबर, ये पुकार अब गूंजेगी!
उपेक्षा की जंजीरे तोड़ , मैं शेर बन दहाडुंगा,
सशक्तिकरण सबका , अब क्रोध से जलाऊंगा!

नहीं सहूंगा ये अन्याय, ये पक्षपात भारी,
लड़कियों का हर सपना चमके, हमारा क्यों अँधियारा?
मैं तूफान बनूँगा, दीवारें तोड़ डालूंगा,
उपेक्षित समुदाय का झंडा, लहराके दिखाऊंगा!

रैवथ प्रशांत चौहान
पी एम् श्री केंद्रीय विद्यालय पोरबंदर, अहमदाबाद गुजरात

58

'खेल बना अधर्म का पथ'

{ खेल, खेल गई थी नियति जब जन्मा था शकुनी, }

जन्मा था एक असुर, मानव की भेष में,
कूटनीति संग शकुनी आया गांधार देश में।
प्रवीण था वह एकमात्र खेल में,
पिता–हाड से पासे बनाए उस चौसर खेल में।

{ वर मिला था शकुनी को – वह कभी चौसर से पराजित नहीं होगा, }

तब अब खेल खेल रही थी नियति,
नियति संग खेल रहा था शकुनी।
नियत बदल–बदल कर अपनी,
नित्य पाप करे अधर्मी।

{ अब आगमन पांडवों का हुआ, }

अपने पतन संग पांडव हस्तिनापुर आए,
मामा–भांजे ने षड्यंत्र रचाए।
शातिर शकुनी जाल बिछाये,
अज्ञान पांडव भाप न पाए।

{ फिर अपनी बातों में फँसा कर खेल खिलवाया.....}

आरंभ हुआ वह अधर्म का खेल,
जहाँ नीति हारी, और छल बना मेल।
भाई ही विपक्षी ऐसा था खेल,
धर्म पर पासे डटे ऐसा था खेल।
अब भ्रष्ट हुआ वंश का अभियान,
कपट–देख, सत्य हैरान।
गूंजे सिर्फ द्वेष के गान,
यही देख अब,
मति संग धर्म करे प्रस्थान।

{ खेल आगे बढ़ा, जहाँ युधिष्ठिर छल में फँसते जा रहे थे,
तब तो आइये देखे युधिष्ठिर की दशा, }

अब धँस निकट आ रहा,
युधिष्ठिर अधर्म की ओर जा रहा।
उचित–अनुचित भेद न पा रहा,
अधर्म को धर्म बता रहा।

{ अब अंतिम दाँव खेला गया, }

अब पासों संग माते हैं पलटी,
अब शकुनी की किस्मत चमकी,
वचन झूठे , दृष्टि कपटी,
सभा में सजी छल की पट्टी,
अब दीप बुझा धर्म का,
क्षण आया पांडवों के पतन का
दाँव लगा बैठे भाई, प्रजा, राज्य का।

तब अधर्म की छायी घटा काली,
जब दाँव पर लगी धर्म–द्रवित पांचालि।

{ स्वयं को हार, वे सबको हार चुके थे... तो
अब बुलावा पांचाली को गया, }

केश पकड़कर खींची गई, पर देख रही सभा,
चीख रही पीड़ा में, पर मौन रही सभा।
अब द्रौपदी प्रश्न कर रही पांडवों से,
हारा मुझको किस अधिकार से?
जब हार गए थे स्वयं को,
क्यों खेला नारी के स्वाभिमान से?

राज–सभा अब स्तब्ध थी,
लज्जित हुए महावीर भी।
जिनसे रक्षा की आशा थी,
नयन झुका हारे वही।

{ अब दुर्योधन का क्रूर आदेश आया,
चीर–हरण का आदेश सुनाया, }

तब सहायता श्री कृष्ण से मांगी,
चीर बढ़ा, लाज सखी की ढँकी।
राज–सभा में मौन तूफान उठा,
धर्म स्वयं अधर्म पर डटा।
जहाँ हथियार चुप थे,
वहाँ करुण पुकार थी।
वह क्षण नहीं, सम्पूर्ण युग की वार थी।

कुमारी लकी
पी एम, श्री केन्द्रीय विद्यालय, कैंट
दिलकुशा, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

59

ऑपरेशन सिंदूर

जब सुनी बहनों की सिसकियाँ,
हृदय में ऐसी टीस उठी।
निकली थी घर से सजी–धजी,
उजड़ी कैसे उनकी खुशियाँ।।
गद्दारों ने धर्म पूछ–पूछ कर,
निहत्थों को मार गिराया।
रह गए तड़पते वही सभी,
उन्हें तनिक दया न आयी ।
फिर मोदी जी ने कमर कसी,
समझाया अपने जवानों को।
ऑपरेशन सिंदूर तैयार किया,
तोड़ा उनके अभिमानों को।
जवानों ने क्या बदला लिया,
एक–एक को चुनकर धो डाला।
पहलगाव के करमकांडी गीदड़ो को,
मेरे शेरों ने झकझोर डाला ‘‘
सिंदूर की ये लड़ाई थी।
वीरों ने फर्ज निभाया।
माँ– बहनों को इंसाफ मिला,
पूरे देश का मन हर्षाया।।
है गर्व ऑपरेशन सिंदूर पे,
गर्व है वीर जवानों पे।
जब तक हैं मेरे शेर यहाँ,
हम सुरक्षित हैं अपने गाँवो में।

आयुष्मान मिश्रा
पी एम श्री केंद्रीय विद्यालय, सूरजपुर, ग्रेटर नोएडा, उत्तर प्रदेश

60

सतत विकास

अब ना करें उन कुओं को याद,
जो प्यास बुझा कर सूख गए,

ये डूबना तुम तक ही ठीक था,
तुम तो हमें ही लेकर डूब गए,

वो और खाली होते गए,
पूरे कटोरे अब न बचे एक,

जो थे मसीहा सबके,
वो एक धब्बा होते गए,

उन कंकालों की चर चर से,
कितने शव लावारिस हैं,

इस व्यवस्था की जर्जर से,
कितने मका अब खाली है,

गूंजती नहीं वहाँ किलकारी हैं,
ये अपने लोगों की देनदारी है,

कहाँ गया वो राष्ट्रवाद वो देश प्रेम,
क्या ये बस सेना की जिम्मेदारी है,

ये वस्त्र श्वेत धारण करके,
क्यों इनकी लाज डूबाते हो,

ये केवल वस्त्र नहीं, शालीनता के पहिये है,
इन्हीं को कीचड़ से सनाते हो,

परलौकिक जगत ही जाने,
तुम कैसे विकास चाहते हो,

कु. मुस्कान संदीप साहू
ब्राइट स्कॉलर्स स्कूल,
कोराडी

61

इंसाफ की पुकार

नारी कभी माँ, कभी बेटी, कभी बहन,
तो कभी जीवन का आधार है।
फिर क्यों होता उस पर अत्याचार है?
क्यों सवाल उठता उस पर हर बार है?

हँसती है तो बोलते हैं गलत है वो।
रोती है तो बोलते हैं कमजोर है वो।
अरे! कभी उसकी आँखों में झाँक कर तो देखो,
हर आँसू में छुपा हौसला और उम्मीद है वो।

कहते हैं कि जहाँ बेटियाँ मुस्कुराती हैं, वही असली कामयाबी आती है।
पर कैसी है ये दुनिया, जहाँ
घर कैदखाना बन जाता है, जहाँ बेटी का मुस्कुराना भी अपराध बन जाता है।

कभी उसे किताबों से दूर किया जाता है,
तो कभी सपनों से दूर किया जाता है।
कभी घर वालों के अत्याचार से,
कभी दहेज के बोझ से,
हर दिन मरती हैं कितनी लड़कियों समाज की इस सोच से।

क्यों गलती हर बार मासूमों पर लगाई जाती है?
क्यों उँगली उनके सपनों पर उठाई जाती है?
निर्दोष बेटियाँ जिनकी आँखों में सपने थे,
किताबों में शब्द और खेलों में रंग थे,
पर दरिंदों की हैवानियत ने वो सपने नोच दिए,
मासूम जिंदगियों को मौत की राह पर मोड़ दिया।

सोचो! क्या कसूर था उन बेटियों का? यही कि वो औरत थीं?
क्या यही है सभ्यता हमारी?
जहाँ औरत की सुरक्षा भी भारी लगती है।

19 वर्षीय मनीषा का कसूर था, उसमें तो बस पढ़ाई का जुनून था।
एक रोज वो निकली स्कूल से कुछ नर्सिंग कोर्स की जानकारी लेने।
अगस्त 2025 – घर वाले पहुँचे पुलिस स्टेशन, उसके गुमशुदा होने की खबर लेकर।
फिर क्यों कानून ने कार्रवाई नहीं की?
क्यों उसके गुमशुदा होने पर भी इतनी ढील दी?

एक दिन, एक रात बीती पुलिस ने कहा,
'वो अपने प्रेमी के संग भाग गई।''
अरे! अगर एक भाग गई तो क्या सब भाग जाएंगी?
कुछ तो ऐसी भी हैं जो सब कुछ सहकर घर वालों का साथ निभाएँगी।

जब इंसाफ करने वाले ही जुर्म करें तो कहाँ जाएँ?
गुनाह के शिकार भी हम बने और दोषी भी हम बन गए।
सब कुछ हो जाने के बाद मोमबत्ती क्यों जलाते हो?
जब इंसाफ दिया ही नहीं जाता तो ऐसा कानून क्यों बनाते हो?

13 अगस्त 2025 – मनीषा का शव खेत में लहूलुहान मिला।
चिल्लाती रही वो, पर किसी ने उसकी एक न सुनी।
बेरहमी से जुल्म कर, गला काट, भाग निकले उसके खूनी।

दरिंदगी बस बढ़ती ही जा रही है,
और सरकार बस कानून बनाती जा रही है।
इंसाफ के इंतजार में रोज कितनी ही बेटियाँ जान गंवा रही हैं।

कुछ दुनिया तो कुछ अपने ही सपने तोड़ देते हैं।
हत्या कर बेरहमी से ''सुसाइड'' बोल देते हैं।

मैं वो निर्भया हूँ –
जो दर्द में चीखती रही और इंसाफ के इंतजार में दुनिया से चली गई।

में वो मनीषा हूँ–
जो खेतों में लहूलुहान मिली और इंसानियत शर्म से झुक गई।

मैं वो मोनमिता हूँ –
जिसके सपनों को दरिंदों ने अधूरा कर दिया।
मैं वो अनगिनत बेटियाँ हूँ –
जिनकी चीख रात के अंधेरे में खो जाती है।
जो इंसाफ माँगती हैं –
सिर्फ न्याय नहीं, सम्मान भी।
सिर्फ सुरक्षा नहीं, अधिकार भी।

समय आ गया है खामोशी तोड़ने का,
अन्याय और अपराध के खिलाफ बोलने का।
हर बेटी को सुरक्षा और सम्मान दिलाना होगा।
उसे देवी नहीं, इंसान मानना होगा।

अरे! कब तक कलियुग के राम जगाओगे?
एक राम जो तुममें बसा है, उसे कब उठाओगे?
बदलो सोच को, गंदे ख्यालों को।

अरे! कब तक ऐसी ही बेटियाँ मरती रहेंगी?
हर दिन अपनी किस्मत को कोसेंगी।
लड़की होना पाप है–यही सोचेंगी।

इन अनगिनत घटनाओं से
तो ये साफ है –कि लड़की होना पाप है।

क्या लड़की होना पाप है?
अब मैं पूछती हूँ एक ही बात सब से
कब मिलेगा इंसाफ?
मैं इंतजार कर रही हूँ कब से।
मुझे दे दो इंसाफ!
मुझे दे दो इंसाफ!

कंगना कनौजिया
श्री केन्द्रीय विद्यालय,
मेरठ कैंट, उत्तर प्रदेश

62

मेरा घर...

सब कहते हैं– छोडो ये घर, चलते हैं–
एक नए घर!
मैं कहती हूँ, "मैं जन्मी हूँ इस घर में"
उस नए घर में, वो बात कहाँ?
फिर भी,
सब कहते हैं– छोडो ये घर, चलते हैं–
एक नए घर!
नहीं कोई, जो मुझे समझे!
जिसे मैं समझती हूँ अपना, वो भी समझाकर चले जाते।
ये घर ही तो है, जो समझता है मुझे।
मैं घर का दिल, घर मेरा दिल!
वो शरीर क्या ! जिसके अन्दर दिल ही न हो।
फिर भी,
सब कहते हैं, छोडो ये घर, चलते हैं–
एक नए घर!
बचपन में पेंसिल से खिंची गई लकीरें,
मन्नत और प्यार की डोरियों से कम कहाँ!
वो दीवारें गुस्से में खुद को पीटने का हथियार लगती,
वो दीवारें खुशी के पलों को सहेजकर रखती।
क्या इंसान है वो, जो घर को बनाता और फिर छोड़ जाता।
सीख लें हम उस मिट्टी से जो घर बनते समय भी
उसके घर के साथ रहती है
और तोड़ने के बाद भी
फिर भी,
सब कहते हैं, छोडो ये घर, चलते हैं–
एक नए घर!
लिखा है एक पन्ने पर,
लेकिन हजार किताबे भी कम है,
सिर्फ इतना ही लिखती हूँ,
जो तुम कह रहे हो वो मैं कैसे कर सकती हूँ।

हरप्रीत कौर
पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय क्र.1, गाँधीनगर, गुजरात

63

सजाएँ भारत को प्रगति के संग

उजाला फैले हर आँगन में,
ज्ञान का दीप जले जीवन में,
नया इतिहास रचें हम सब मिलकर,
भारत चमके पूरे जग में।

हर खेत खिले, हर बगीचा महके,
हर सपना अब सच में बहके,
जहाँ न रहे भेद कोई भी मन का,
सबको मिले अधिकार बराबरी का।

मेहनत, साहस, विश्वास का संग,
बनाएँ भारत को प्रगति का रंग।

स्वच्छ हों गलियाँ, निर्मल हो गगन,
शांति के दीप जलाए हर जन।
आओ मिलकर करें ये संकल्प प्यारा,
विकसित भारत बनाएँ सारा।

प्राची सिंह
ग्रीन लैंड सीनियर सेकेंडरी
पब्लिक स्कूल, लुधियाना

64

हमारी हिंदी

हिन्दी हमारी आन है
हिन्दी हमारी शान है
हिन्दी हमारी चेतना
वाणी का शुभ वरदान है।

हिन्दी सिर्फ भाषा नहीं, आत्मा है इस देश की
संस्कृति की सांस है, पहचान है विदेश की
इसे छोटा कहने वालों, अब सुन लो जरा ध्यान से
ताकत है ये खून की, बहती है अभिमान से।

शब्द नहीं है ये भावना है, जो दिलों को है जोड़ती
हर भारतीय की जुबां से ये बोलती
जिसने आजादी की आवाज में दम भरा
वह भारत की भाषा है हिन्दी।

हिन्दी में इतिहास है, परंपरा का मान है,
हर शब्द इसका जैसे भारत की शान है
ये सिर्फ वार्तालाप नहीं, विचारों का संग्राम है
हिन्दी में ही छुपा भारत देश का असली नाम है।

हिन्दी में माता का साया, संस्कारों की है छाया
हर शब्द इसका जैसे माँ की ममता मन में है लाया
सरल, सहज, सबके मन में उतरती
हिन्दी वो नदी है जो सबके जीवन में बहती।

हिन्दी का प्रचार बढ़ा तो लंदन तक भी पहुँच गया
अंग्रेजी बोलने वालों ने भी हिन्दी बोलना सीख लिया
भारत की पहचान बनी, संस्कृति का ज्ञान दिया
दुनिया ने सर झुकाकर, हिन्दी को सम्मान दिया।

भाषण चाहे अंग्रेजी में दिया जाए,
पर असली मजा तो सिर्फ हिंदी में ही आता है
भावनाओं को व्यक्त करने का जो अंदाज है अपना
''मेरे भाइयों और बहनों'' वो तो हिन्दी ही सिखाती है।

एकजुट रहना हमें हिन्दी ने सिखाया
आजादी के वक्त हमें ढाल बनकर बचाया
इस भाषा से दूर मत भागो भैया
इसे सम्मान दो जो इसने हमें करना सिखाया।

मयंक कुमार सिंह
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय
पासीघाट, अरुणाचल प्रदेश

65

हनुमान

जन्मा था वह दक्षिण में
आधा बंदर आधा पुरुष।
बचपन में ही खाने चला था सूरज को,
शिकायत करते आए सूर्य देवता उसके घर,
निकाल दी उसकी सारी शक्ती।
समझ रहे थे लोग उसको छोटा,
बड़ा बना तो जला दी सारी लंका।
बचा लिया सीता मैया को,
और जीत लिया दिल रामजी का।
दिया देवताओं ने अमरजीव आशीर्वाद,
एक ही था वह वीर हनुमान।

मिहिर पोल
पोदार इंटरनेशनल स्कूल,
सतारा

66

सरकारी नीतियाँ

कहाँ से चलती, किस ओर की जाती है,
यह नीति तुम्हारी, बो रोज फरमान लाती है।
एक अंकगणित है, कागज पर जो सजती है,
जनता की नब्ज पर, कहाँ वह उतर पाती है?

संसद के हॉल में, ऊँची आवाज से,
वादे निकलते हैं, नए–नए साज से।
पर गली–मोहल्ले में, जहाँ धूल और धूप है,
असली बदलाव का, कहाँ दिखता रूप है?

किसी के लिए वरदान है, किसी को दंड है,
हर एक कानून का, अपना पक्ष और खंड है।
अधिकारी की मेज पर, फाइलें विलंब करती हैं,
आसानी की राह पर, सौ बाधाएँ मरती हैं।

कोई योजना मंजिल तक पहुँच ही नहीं पाती,
कोई हवा के झोंके में, बस नाम बन जाती।
है बड़ा कहना यह, जो देश को चलाती है,
पर गरीब की भूख को, कब यह मिटा पाती है?

यह आशा भी है और निराशा का भी कारण,
भविष्य की नींव है और वर्तमान का आवरण।
बस इतनी दुआ है, हो ऐसी सरकार की नीति,
जो सबकी भलाई हो, न हो बस राजनीति।

काव्या सिंह
सौ. शकुंतला रामसेठ ठाकुर स्कूल, महाराष्ट्र

67

ऑपरेशन सिंदूर

शैतान जब खतरा बनकर आया था पहलगाम
दुष्टों ने पूछा – अल्लाह या राम ?
पूछने वाले ने ऐसा किया नीच काम,
इंसानियत को मारकर बदनाम किया
उपरवाले का नाम

बहुत हुआ, बहुत सहा, अब न बैठेगे बाँधकर हाथ,
मन में अब एक ही बात
ईट का जवाब पत्थर के साथ।

तो ली भारत माँ की कसम
सिंदूर का बदला लिए बगैर खाली हाथ नहीं लौटेंगे।
आतंकी तो एक नहीं बचेगा मगर आतंकवाद का भी गला घोटेंगे।

तो निकल पडें विमान अनेक
जिनमें बैठे हमारे वीर सैनिक
आतंकवादियों को बनाया राख
पर नहीं बिगाडी मासूमों की रात

भारत के विमान फिर लौट आए
राष्ट्रगान को गर्व से गाऐ
देते है चेतावनी हम आखिरी बार
सिदूंर पर कभी न करना वार

मन्वय सागर शहा
डी.एस.पी

68

ऑपरेशन सिंदूर

करीबन में एक बज रहे थे।

रात अपनी गहराइयों में उतर चुकी थी ।

सब कुछ थमा हुआ था –हर कोना गहरे सन्नाटे में डूबा हुआ था

ना कोई हलचल, ना कोई जुलूस, बस थी तो एक गूंजती हुई ख़ामोशी की धुन।

ना शोर हुआ, ना कोई घोषणा हुई... बस उस अंधकार की बेला में

हर स्त्री के सिंदूर की लालिमा गहरी हुई।

पूरा मुल्क मौन था, परंतु सीमा पर एक ऐसी गूंज थी जो हवा से टकरा रही थी –

एक ऐसी आहट जिसने पूरी भारतभूमि को सजग कर दिया था ...

यह सिंदूर का रक्त–रंग किसी स्त्री के माँग का श्रृंगार नहीं ...

पर हर उस नौजवान के मन में जली आग थी।

वह प्रतिशोध की ज्वाला जो उन छब्बीस मासूम नामों के नाम पर सुलग रही थी।

अब ठान लिया था, बस मान लिया था।

एक वचन में इसे बाँध दिया था।

ना हार का डर, ना मौत का भय।

ना प्राणों की परवाह, ना जीने की चाह।

बस थी तो एक जिद...

कि मातृभूमि की माँग फिर से लाल हो, पर श्रृंगार से नहीं बलिदान से।

यह सिंदूर का रक्त–रंग किसी स्त्री के माँग का श्रृंगार नहीं।

हर उस नारी का सम्मान है जिसके सुहाग से पहलगाम की भूमि रक्त–रंगीन हो गई थी।

अब सिंदूर बस श्रृंगार नहीं, एक संकल्प बन चुका था।

एक मान का प्रतीक, सम्मान का अधिकार था।

ना कोई नारा, ना कोई शोर, बस वचन का वार था।

सिंदूर अब बस सुहागन की निशानी नहीं, राष्ट्र की पुकार बन चुकी थी।

और उस रात, सिंदूर ने श्रृंगार नहीं, संघर्ष का इतिहास लिखा था

आराध्या राव
दिल्ली पब्लिक स्कूल, महाराष्ट्र

69

नारी

देश की मैं बेटी हूँ,
कुछ सवाल लेकर आई हूँ।
आँखो में आँसु,
दिल में बवार लेकर आई हूँ।

आप सभी की मौन साथना,
बस आज नहीं चाहिए।
आखिर क्यों होती है लड़कियां ही गलत,
बस आज यही बताईए।

हाँ मैं ही वो निर्भया,
मैं ही वो दो साल की बच्ची हूँ,
जो चीख–चीख कर कहती थी,
छोड़ दो मुझे, मैं उम्र से कच्ची हूँ।

हाँ हुआ था शोषण मेरा भी मगर,
मैं खुद को मौत की नींद नही सुलाउँगी।
मैं कलयुग की द्रोपदी हूँ,
लाज बचाने श्री कृष्ण नहीं बुलाउँगी।

अजी बताओ अंधी अदालत में,
कानून का खेल भी क्यों खेला जा रहा है?
जब सरे–आम ही घुमाना है दरिंदो को,
तो जेल का आदेश भी क्यों दिया जा रहा है?

धारण कर मैं अस्त्र–शस्त्र,
खुद ब्रह्मास्त्र चलाऊँगी।
हनुमान जी की भक्त हूँ,
ये कहने से कतई नहीं घबराऊँगी।

तुम छुओ तो मेरी पूँछ,
एक बार फिर तुम्हारी पूरी लंका फूँक जाऊँगी।
मैं कलयुग की द्रोपदी हूँ,
लाज बचाने कृष्ण नहीं बुलाऊँगी।

एक दिन मेरे प्रकोप से,
ये सारा संसार घबराएगा।
जब हिमालय भी मिलकर मेरे साथ,
राग विलाप गाएगा।

खत्म कर मैं सारी सृष्टि,
मौत की नींद सो जाऊँगी।
मत उलझो मेरे प्रकोप से,

वरना गंगा में भी रक्त का सैलाब ले आऊँगी।

यह याद करो कि ये नारी है,
इसने ही संपूर्ण धरा बनाई है।
आपको फिर बता दू, एक नारी ने ही,
संपूर्ण महाभारत तक रचाई है।

देश की ये बेटी,
आज एक बात कहकर जाएगी।
बदल जाएगा मेरा देश,
जब हर लड़का वीर शिवाजी,
और हर लड़की रानी लक्ष्मी बाई बन जाएगी।

सृष्टि राज महतो

70

बाढ़

बारिश आई बहुत जोर जोर से,
नदी भर गई पानी से।
गाँव डूबे, घर बह गई,
लोग सभी डर से रो दिए।
सैनिक आए नाव चलाकर,
बच्चों को बाहर ले जाकर।
हमको सीख यही है पाई,
प्रकृति से मत करना लड़ाई।
पेड़ लगाओ, पानी बचाओ,
सुंदर भविष्य साथ बनाओ।

ऐश्वर्या दुर्गम

71

(बुंदेले हर बोलो की ज़ुबानी एक औरत की कहानी)

वह लोग जिन्होंने बाटा शिक्षा को अलग–अलग था।

लड़की है तो चूल्हा,

लड़का है तो शिक्षा को चुना था।

पर कुछ नहीं तो दोनों को भी पढ़ाया था,

फिर भी न जाने क्यों लड़कियों से ही घर का काम करवाया था।

औरत पर ही थोपी जाती लज्जा की सारी बातें थी,

लोग क्या कहेंगे यह भी एक औरत की जिम्मेदारी थी।

बुंदेले हरबोलों को तो सिर्फ यह बात बतानी थी,

की मर्दानगी मर्दों पर छोड़ो पर यह तो एक औरत की जन्म कहानी थी।

भूल गए हो रानी को जिसने, रक्त बहा कर अपना मिट्टी बने राजस्थानी थी।

नजरों से पाला जिसके बाबा ने उसे, वह मेवाड़ की रानी पद्मावती कहलाती थी।

मर्दानगी औरतों पर भी छोड़ो, यह बोलने वाली है 15 वर्षीय नारी थी।

तिलू सौतेली था उसका नाम,

छल से उसने भी अपनी जिंदगी हारी थी।

चंडी हो रण चंडी हो दुर्गा के सारे रूप हो तुम,

पर न जाने क्यों उस ही औरत को सहन अपमान हमेशा पढ़ता था।

नारीवाद के लिए लड़ने वाली स्त्रियां बहुत सारी थी,

पर बुंदेली हर बोलो को तो यह बात बतानी थी,

की औरत की कुर्बानी हमेशा व्यर्थी जानी थी।

एक कुल वधू पुकारते सबको ,

जिसको दूर शासन केस पकड़ कर लाया था।

ना दोष कहीं था उसका ना खेली थी उसने चौसर की क्रीड़ा,

फिर भी न जाने क्यों सही उसने ही थी सारी पीड़ा।

किसी राजा की नहीं वह संपत्ति जो लगा है उसको खेल में,

मां कुंती ने जिसको बांट दिया और नाम दिया पांचाली था।

जो पता लगा उसके कान्हा को क्षण भर भी देर न लगाएंगे,

पांच पतियों में से कोई ना आ सका श्री कृष्ण द्रौपदी के लिए आए थे।

बुंदेले हरबोलों को तो यही बात बतानी थी की,

मर्द की मर्दानगी की पर सवाल कोई नहीं उठाएगा

चरित्र पर बात जाएगी, तो औरत के ही जाएगी।

अग्नि पार कर लंका छोड़ रावण की

जो खुद को पवित्र कर आई थी,

जिन्होंने पर की परीक्षा उसे सब छोड़ आए थे।

प्रमाण दिया श्रद्धा का फिर भी इतना सोचना पड़ा,

वनवास मिला राम को पर सजा सीता ने भी पाई थी

महलों की रानी साथ गई थी वन में पीड़ा बहुत खाई थी।

मर्यादा पुरुषोत्तम है आप तो,

फिर भी सीता के साथ ऐसा अन्याय क्यों?

6 वर्षीय नारी शिव धनुष जिसने उठाया था

श्री परशुराम के कदम भी जिसके सामने ठहर गए

उसे नारी को सीता के नाम से सम्मान दिया।

फिर भी बुंदेली हर बोलो की कहानी तो मर्दों पर ही जा रुकी

भूल गए क्या जब सब मर्दों ने अपनी पगड़ी अंग्रेजों के कदमों में रख दी थी तब एक जनानी, एक औरत, एक अपराजिता खड़ी हुई थी।

पर आप लोगों की मां साधना आज नहीं चाहिए क्यों इतना गलत ठहराते हो एक नारी को आज यही बताइए।

परिधि
केंद्रीय विद्यालय,
देहरादून

72

ऑपरेशन सिंदूर

सात मई दो हजार पच्चीस की रात
जब एक बच्चा चैन से सो रहा था अपनी माँ के साथ
क्योंकि बॉर्डर पर थे फौजी तैनात।
हर महिला का बचाया सिंदूर,
फौजी ने गोलियां चलाई आतंकवादी भागे दूर दूर।
बहुत था उनको हमारे साथियो को मारने का गुरुर
जिसे हमने कर दिया चूर–चूर
अब ना मिटने देंगे सिंदूर
और ना मिटने देंगे सिंदूर

साक्षी गिरी

73

ऑपरेशन सिंदूर

बरसती गोलियाँ, बर्फीली रात,
जवानों ने थामी हिम्मत की बात।
हर कदम पर था मौत का साया,
फिर भी तिरंगे को ऊँचा लहराया।

कंधो पर जिम्मेदारी थी भारी,
दिल में थी केवल मातृभूमि प्यारी
निद्रा छोड़ी, चौन भी गँवाया,
सीमा की रक्षा का वचन निभाया।

खून की हर बूंद ने लिखी कहानी,
वीरों ने दी अपनी कुर्बानी।
ऑपरेशन सिंदूर बना प्रतीक बलिदान,
जिससे रोशन है मेरा हिन्दुस्तान।

हम झुककर करते हैं नमन,
उनकी वीरता का गाएँ गुण–गान।
भारत माँ के सच्चे सपूत,
उनसें ही है देश की जड़ें मजबूत।

गरिमा

74

ऑपरेशन सिंदूर

वदियों में गूंजी चीख दहशत की,
खून से रंगी धरा पावन थी।
चीख रही थी स्वर्ग में,
मांग में सिंदूर, वो गोद में।

मासूमों पर बरसाई आग,
न जाने कैसा हैवान था,
न भाव दया का, बेशर्म था।

टूट गए सपने,
बिखर गए आंगन,
किसी का पति,
किसी का पिता,
पल भर में थी जलती चिता।

आंसुओं में डूबा था हर घर,
अंधेरे ने ली थी अंगड़ाई।
पर वो भूल गए थे ये दरिंदे,
भारत माँ की है संतान लाड़ली।

फिर तिरंगे की शान बनकर आए,
वीर जवान, सीना तानकर आए
सरहद पर लहु से लिखि कहानी,
हर शहीद ने दी है कुर्बानी

उठी आवाज न्याय की गर्जना से,
सिंदूर बना तलवार की धार।
माँ दुर्गा का रूप धरकर,
किया अत्याचार का संहार।

जख्मों को सीकर फिर खड़े हुए।
टूटे दिलों को जोड़ा एकता ने।

आतंक के सीने में गोली दागी,
शौर्य की गाथा गाई वीरता ने।

याद रहेगा पहलगाम का वो दिन,
जब दहशत ने दी थी दस्तक।
पर भारत के वीरों ने साबित किया।
न झुकेगा ये देश, है अटल–अडिग।

शहीदों को शत–शत नमन हमारा,
उनकी शहादत व्यर्थ न जाएगी।
जब तक सूरज चाँद रहेंगे,
उनकी वीरता की गाथा गाई जाएगी।

उदभीता दास

75

मेरे सपनों की मधुशाला

कभी हँसती हूँ, कभी रोती हूँ, पर दिल नहीं घबराता है,
हर ग़म को मुस्कान बना दूँ, यही तो जीना सिखाता है।
ज़िंदगी एक प्याला जैसी, खट्टी–मीठी हाला है,
हर दिन कुछ नया सिखाती – मेरी प्यारी मधुशाला। (1)
कभी दोस्तों में हँसी बाँटूँ, कभी किताबों में खो जाऊँ।
कभी माँ की गोद में सिर रख, चुपचाप सपने देख जाऊँ।
हर पल में कोई जादू हैं, कोई छोटा उजियाला है,
छोटी–सी खुशियों से बनी – मेरी अपनी मधुशाला। (2)
ना कोई जाम, ना साक़ी है, बस दिल की बातें प्यारी हैं,
कभी आँसू, कभी हँसी मेरी, यही मेरी तैयारी है।
गलतियों से सीखती जाती, हर चोट भी रखवाला है,
हर कोशिश में चमक उठे – मेरी नन्ही मधुशाला। (3)
जब कभी मैं हार भी जाऊँ, तो खुद को याद दिलाती हूँ,
"जो गिरकर भी उठ जाए फिर, वही असली कहलाती हूँ।"
सपनों को रंगो से सजाऊँ, मन मेरा मतवाला है,
हर धड़कन में गीत बसा – मेरी प्यारी मधुशाला (4)

वैष्णवी
भानु प्रताप पब्लिक स्कूल, रुद्रपुर

76

विकसित भारत की नई उड़ान

स्वदेशी सामग्रियों के उत्पादन से,
बढ़ा भारत का मान।
विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार कर,
बनाए भारत की नई पहचान।।
अमरिकी टेरिफ एवं वीजा से,
नहीं कोई ज्यादा नुकसान।
हिन्दुस्तान की जनता एवं सरकार ने,
दिया विश्व को नया फरमान।।
जीएसटी से आर्थिक मजबूती,
साफ–सफाई से स्वच्छ भारत बनाएंगे।
हर खेत, हर बाड़ी मे एक पेड़ माँ के नाम,
लगाकर पर्यावरण बचाएंगें।।
प्रधानमंत्री जनधन, आवास, किसान सम्मान,
एवं मुद्रा योजन ने युवाओं को रोजगार
दिया।
ऑपरेशन सिन्दूर के माध्यम से आतंकियों की
कमरतोड़,
भारतीय सेना ने नारियों का सम्मान किया।
शिक्षा, स्वास्थ्य, विज्ञान प्रौद्योगिकी में,
नई तकनीक अपनाएगें।
मेक इन इंडिया और डिजिटल इंडिया को
साकार कर,
2047 तक विकसित भारत बनाएंगे।

देवीना सिंह
पीएम श्री के.वी. काण्डागाँव

77

ज्ञान का दीप

आओ जलाएँ ज्ञान के दीप, फैला हुआ
अंधकार विश्व में,
न दिखाई दे कोई राह, न कोई आस।

तो केवल एक दीप ही है, जो फैला सकता,
चारों और एक सुनहरा प्रकाश,
ये दीप है न मिट्टी का, न पत्थर का,
ये तो दीप है ज्ञान, शिक्षा एवं विज्ञान का।

साल था 1950, 26 जनवरी का दिन था
आया,
बाबासाहेब ने इस दीप को भारतवर्ष में
जलाया।
देकर स्वदेश को नया संविधान
भरे बाबासाहेब ने देश में नए प्राण।

किंतु ये सब एक दिन में नहीं हुआ,
क्रांतिकारियों ने कठिन अध्ययन किया,
कई सैनिकों ने अपना बलिदान भी दिया, तब
जाकर अंत में, इस दीप ने, सब शुभ मंगल
किया।

किंतु आज, है ये दीप खतरे में जिन युवाओं
से बाबासाहेब लगाकर बैठे थे बड़े अवसरों
की आस,

वे तो होकर नशों में बर्बाद, कर रहे हैं, अपने
ही घर का सर्वनाश।

जिस दीप ने बनाया है भारतवर्ष को,
आज उस दीप को बचाना है,
सब कुकर्मों को त्याग कर,
एक साथ अब कदम बढ़ाना है।

चारुव्रत बैंस
एम. जी.एन. पब्लिक स्कूल, कपूरथला

78

माँ– मेरी दुनिया

जब भी थक कर बैठता हूँ जीवन की राहों में,
तेरी यादें आती हैं ठंडी हवा की चाहों में।
तेरे आँचल की वो खुशबू आज भी साथ है,
जैसे हर दर्द के बाद तू ही मेरी राहत है।

तूने सिखा दिया गिरकर भी मुस्कुराना,
अँधेरे में भी उम्मीद का दीप जलाना।
तेरी डाँट में भी प्यार का समंदर था,
तेरे शब्दों में ही तो जीवन का सुंदर था।

जब डर लगता था, तू कहती थी ''मैं हूँ न'',
वो चार शब्द बन गए मेरी शक्ति का कोना।
तेरे बिना ये घर बस दीवारों का मकान है,
तेरी हँसी से ही तो हर कोना गुलिस्तान है।

तेरे हाथों के खाने में स्वाद से ज्यादा अपनापन है,
तेरी गोद में दुनिया का सबसे बड़ा आश्रयस्थल है।
कभी सोचा नहीं, कैसे कहूँ शुक्रिया तुझसे,
क्योंकि तू ही तो मेरा ''पहला भगवान'' है सच्चे अर्थों में।
माँ, तू कविता नहीं खुद कविता की परिभाषा है,
तेरा प्यार अमर है, तेरी ममता ही भाषा है।
अगर जीवन में कुछ अच्छा किया मैंने कभी
तो वो तेरी दुआओं की ही परछाई होगी सभी।

साई श्रेहंस दाश
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय, बदमाल, बलांगीर, ओडिशा

79

स्मृति के यादगार पल

जीवन है स्मृति के यादगार पल,
अब यहाँ, कब कहाँ जाए ये बनकर कमल।
इन लम्हों को हम जीते–जीते,
पर हाथों से ये सब निकल जाए धीरे–धीरे।

मेरी माँ की कहानियाँ, और बहन की शरारतें,
कब बन जाएँ मेरे लिए मुस्कानें,
और उसी पल को फिर से जीने की
फरियादें।

काश मैं थोड़ा ज्यादा जी लेती,
और असंतोष का पात्र न बनती,
तो शायद इन लम्हों को कुछ देर और रोक
लेती।

जीवन तो यही है, स्मृति के यादगार पल,
न इनमें मेरा कोई नियंत्रण,
न इनमें मेरा कोई सार।

सार तो बनते हैं इन मुस्कानों और ख़्वाबों से,
जो आज बन चुके हैं मेरा सत्य।
पर अब जब मुझे पता है
कि स्मृति और समय लौट कर नहीं आते,
मुझे विषाद होता है
पर मेरे लिए इसे स्वीकारना ही है बेहतर।

समीक्षा पात्र

80

युग प्रवर्तक

देख विडम्बना इस युग की
मर्यादा शर्मसार हुई
घर– घर में हाहाकार मची है
बाहर है जय – जयकार की।

लूट मची है बाहर भीतर
रखवाले की तार नहीं,
वसन बेच कर, शौक मची
संस्कृति की मान नहीं

दो बच्चे सोये हुए हैं
भूखे अपने आंगन में
गिरा हुआ है बाप मतवाला
मदिरालय के प्रांगण में
सिखा रही है, टी वी सीरियल
तीन पतियों का प्यार सही
स्टेटस के चक्कर में
मर्यादा सब शर्मसार हुई

देख विडम्बना कल युग की
फटती है सीना धरती की
भ्रुणहत्या, नारी शोषण
बस यही कथा है धरती की

आभास वर्मा

81

माँ की ममता

वह कभी गुस्सा करती तो कभी डॉट लगाती हैं।

सही गलत में फर्क समझती, प्यार से बोलना सिखाती हैं।

कभी हँसती, तो कभी हँसाती, सच बोलना हमे सिखाती हैं।

एक चीज माँगते तो दो चीज दिलाती हैं।

हमें खाना खिलाकर खुद भूखी ही सो जाती हैं।

हमें खाना खिलाकर

खुद भूखी ही सो जाती है।

इस दुनियाँ में माँ की ममता, सबसे प्यारी, सबसे न्यारी ।

अक्षत कुशवाहा

82

क्या ये सपने सच होंगे?

भ्रष्टाचार का सागर लहराए, घुसपैठ की आँधी छाए,

जात–पात और धर्म के जाल, क्या कभी टूट पाए?

एकता का मशाल उठेगा, हर दिल में उजियारा होगा,

बताओं, क्या ये सपने सच होंगे? क्या ये प्यार होगा?

अनगिनत जिम्मेदारियाँ मेरी खिडकी पर दस्तक दें,

फिर भी चेहरा आसमान में, सपनों से ही रोशन रहे।

रास्ता दूजा भटका दें, मन में कितनी उलझने बताओं, क्या ये सपने सच होंगे? या रह जाएँ बस चाहते?

शिक्षा का मैल, नौकरियों का अब बडा व्यापार,

गरीब व वंचित पाएँगे, क्या उनका भी अधिकार?

भ्रष्टाचार के इस युग में, क्या ज्ञान रहेगा टिकाऊ? बताओं, क्या ये सपने सच होंगे? या सब डगमगाऊं ?

नई पीढ़ी लेगी पुकार, एक दिन सपने होंगे साकार, सत्य और इमानदारी से होगा जग में उद्धार। खुशीयों की बरसेगी फुहार, हर दिल में होगा प्यार, सपनों का संसार बनेगा, सुखी रहेगा वह संसार।

रितिका चंदुलाल धुमाल
विदया प्रतिष्ठान अनंतराव पवार इंग्लिश मीडियम स्कूल, चिंचोली

83

यह देश हमारा है

ओ फिरंगी यह कृष्णा भूमि छोड़ दो
भारत की धरा से अब हर बंधन को तोड़ दो,
ओ महापुरुषों उठो शिव बाण साध लो
अन्याय की जंजीरों को बिजली–सी काट दो,
फिरंगी, ये धरा तेरी नहीं गंगा–यमुना की संतान है
यहाँ हर कण में अर्जुन के तीरों की पहचान है,

देखो, माँ की आँखों में आंसू नहीं
अब ज्वाला जल रही है
यहाँ हर बेटा अब अभिमन्यु बन रहा है
और हर बेटी दुर्गा सी बन रही है,
यह वही भूमि है जहाँ महावीर ने तप किया
अहिंसा का दीप जलाकर मानव धर्म दिया,
जहाँ हर युग में त्याग की परम्परा खिली
और अन्याय की हर जंजीर आग में जाली,

संपत्ति हमारी, पैसा हमारा, रुतबा पैर नहीं चुराने देंगे
उन मासूमों की जानो को व्यर्थ नहीं जाने देंगे,
मत रोको मुझे, मत टोको मुझे
ये रणभूमि मेरी है जंजीर तोड़नी है मुझे
भारत माता मेरी है,
तो सुन ले फिरंगी –तेरे अन्याय का सूरज अब डूब चूका है
तिरंगे की हर लहराती साँस, तेरे ताज को कुचल चुकी,

ओ वीरो! उठो, यह क्षण आखिरी है
रक्त की हर एक बूँद अब बलिदान की साक्षी है
शिव का शिव है. शक्ति का आशीष है,

जब अत्याचार की आंधी पे लग जाएगा अंकुश
तब स्वतंत्रता का तूफान आएगा बनके एक नई पहचान,
अब नहीं बन सकते और बुद्ध, अब रानी लक्ष्मी बाई की बारी है
भारत की धरती हमारी है,
बहुत सुना लिया इन्हें बांसुरी का मधुर स्वर
अब राम के तीरों की बारी है
भारत की धरती हमारी है,
ना मैं भूल सकता हूँ वो बलिदान
ना मैं भूलने दूंगा वो अरमान,

हर बूँद लहू की पुकार बनेगी
मन भारती के लिए जियेगी यह जिंदगी,

भारत माँ के आँचल से निकले हम
उनकी यह तेजस्वी औलादें हैं हम
ना देंगे माँ का सर काटने,
ना देंगे भाई का मस्तक झुकाने,

जम्मू–कश्मीर से कन्याकुमारी की लहरों तक,
गुजरात की धरती से अरुणाचल की पहाड़ियों तक,
हर कण, हर घाटी, हर मैदान गा रहा है
''यह देश हमारा है, यह स्वाभिमान हमारा है।''

अंकुश सिंह तोमर

84

ऑपरेशन सिंदूर

लाल सिंदूरी धरती पर,
वीरों ने इतिहास रचा।
साहस, त्याग और बलिदान से,
भारत का मस्तक ऊँचा रखा।

आँधियाँ चलीं, तूफान उठे,
पर हिम्मत न डगमगाई।
हर सैनिक ने सीना तान,
मातृभूमि की शपथ निभाई।

रक्त की बूंदें सिंदूर बनीं,
शौर्य की गाथा लिख गई।
हर दिल में जोश, हर मन में विश्वास,
विजय पताका फिर लहराई।

वीरों का यह अमर अभियान,
राष्ट्र की पहचान बना।
ऑपरेशन सिंदूर के उज्ज्वल रंग ने,
भारत को गौरवमयी ताज पहनाया।

आहान सचदेवा
बाल भारती पब्लिक स्कूल,
रोहिनी

85

ऑपरेशन सिंदूर

सात मई दो हजार पच्चीस की रात,
जब हुआ दुश्मनों पर आघात।
भारतीस सेना ने साधा निशाना
आतंकी ढांचो को था मिटाना।।

भारत के उन सभी वीर जवानो को सलाम,
जिन्होंने 'ऑपरेशन सिंदूर' मे भाग लेकर
पाकिस्तानी आतंवादियों के खिलाफ
अदम्य शौर्य का परिचय दिया।

पहलगाम में आतंकियों ने बरफाया था।
धर्म पूछ कर निर्दोषों का उन्होंने खून बहाया था।।

तब भारत ने ऑपरेशन सिंदूर चलाया था।
आतंकी ठिकानों को पल भर में उड़ाया था।
आंखों में अंगारे थे, गोले दुश्मन पर दागे थे।
देख प्रलय सा नजारा, दुश्मन भी सारे भागे थे।।

पहलगाम के हमले का क्या खूब इंतकाम लिया।
जय जय भारत सेना, की जन जन ने जयकार किया।

मानवी जाँगिड
डूण्डलोद पब्लिक स्कूल

86

ऑपरेशन सिंदूर

माँ की माँग में जो सिंदूर सजा,
वही वीरों के माथे का तिलक (ताज) बना।
ना क्रोध का शोर, ना बदले की चाह,
बस सच्चे दिल से जननी का मान बचा।
जिस राह में सच्चाई थी, उसी और दिल बढ़ा,
इंसानियत के लिए ही उसका हर कदम उठा।
सीने में साहस, आंखों में दुआ,
रास्ते कठिन थे, पर मन न डिगा।
बच्चों की हँसी को अपना सहारा बना,
भविष्य की आखों में उनका सवेरा रचा।
आँसुओं को पीकर वो हौसलों से लड़ा,
तभी तो सिंदूर का रंग इतना गाढ़ा चढ़ा।
आज भी कोई पूछे असली शौर्य किसे कहा
तो गर्व से कहूँ जो घाव सहकर भी मुस्कुरा उठा,
वही सच्चा सिपाही रहा। वही सच्चा सिपाही रहा।।
।। जय हिंद।।

भाविन सिंह डूडी
डूण्डलोद पब्लिक स्कूल

87

भारत का सिंदूर

भरी दोपहर, पहलगाम में भरा उजाला छाया था,
उस नीले सुंदर गगन में एक काला बादल भी आया था।
छब्बीस लोगों को धर्म पूछ कर बुरी तरह से मारा था,
वो वक्त था जब भारत का वासी केवल बेसहारा था।
अब तो इन दहशतगर्दों का करना था चूर गुरूर घना,
फिर चला था ऐसा संचालन जो भारत का सिंदूर बना।
आकार विशाल लेकर उल्काएं अग्निरूप में बरसी थी,
आग वही थी जो मासूमों की चिताओं पर जलती थी
ये धर्म–धर्म ये जात– पात ये घोर कलयुग के लक्षण है
ये मनुष्य रूपी असुर है जो नित ही करते नर्भक्षण है।
आखिर इन असुरों का घमंड केवल पैरों की धूल बना,
सफल हुआ ये संचालन जो भारत का सिंदूर बना।

योग रणशूर
डी.ए.वी पब्लिक स्कूल, ठाणे

88

ऑपरेशन सिन्दूर

सिन्दूर है एक निशान लाल,
प्यार का प्रतीक, उजली भोर–सा हाल।
पर जब वीर सिपाही हुए बलिदान,
टूट गए कई दिल, छूट गई जान।

विधवाओं ने सिन्दूर मिटाया,
आँसुओं का सागर बहाया।
दुख मिटे, मिले सम्मान,
फिर उठे हमारे वीर जवान।

रात के अँधेरों को चीर चले,
उम्मीद की रौशनी लेकर चले।
न्याय था उनके हर संघर्ष में,
सच की जीत हुई हर गर्जन में।

ऑपरेशन सिन्दूर, साहस की शान,
मेरा सलाम, तुम्हें भारत महान।

काव्या एस
पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय
नंबर 2, एएफएस तांबरम,
चेन्नई

89

ऑपरेशन सिंदूर

जब कहा था आतंकवादियों नें,
जा बता दे मोदी को इसके बारे में,
तब मोदी जी ने यह मानी बात
नहीं सुनेंगे यह ऐसे बात।

तब जन्म हुआ ऑपरेशन सिंदूर का
जोश जगाया हिन्दुस्तानियों का
लगा पाकिस्तानियों को तमाशा यह
पर कौन उन्हे बताए, मजाक नहीं है यह।

तब मोदी सरकार ने ब्लैक आउट किया ऐसा,
कि जिसके बाद निकला पाकिस्तानियों का रोना।

अच्छा तो लगा हिन्दुस्तानियों को बहुत,
पर साथ ही में उन्हें सबक भी सिखाया।

अब बात पता चली पाकिस्तानियों को यह
कि तमाशा या मजाक नहीं है, हिंदुस्तानियो का यह।
दिल से वन्दे भारतीय आर्मी को,
बधाई हो भारत, इसके लिए आपको।

श्रीजा तिवारी
स्कूलः पी.एम. श्री केन्द्रीय विद्यालय कोलीवाड़ा
पताः एंटोफिल, सेक्टर 1, मुंबई

90

एक दिन

वह ख्वाब नहीं आशा है,
वह चाह नहीं अभिलाषा है,
जो जीत की राह दिखाता है,
ऐसा भी एक दिन आता है।

जो हुआ ना था अब हो जाएगा,
जो कर ना सका वह कर जाएगा,
जो पा ना सका वह पा जाएगा,
ऐसा भी एक दिन आएगा।

जो टोकते थे वह टोक ना सके,
जो रोकते थे वह रोक ना सके,
जो लक्ष्य है उसका वह हासिल कर जाएगा,
ऐसा भी एक दिन आएगा।

उड़ान भरी उस आशा की,
उस जीत की अभिलाषा की,
जो लक्ष्य था उसे वह पा गया,
जो सोचा था वह करके दिखा गया,
वह जीवन की नई राह दिखा गया,
वह दिन भी आ गया।

ऐसा भी एक दिन आएगा।।

आकांक्षा खरे
पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय नंबर 3,
गुलाम गॉस मार्ग, उत्तर प्रदेश

91

आतंकवाद

देश के लिए कलंक आतंकवाद है।
मसले नही हो सकते हल, कैसा विवाद है।
गोलियों से रोज सही भुनता आदमी,
ताने फसानें को यहाँ खुद सुनता आदमी।
आदमी है आदमी के खून का प्यासा।
क्या जाति सम्प्रदाय हो या धर्म हो भाषा।

इंसान के लहू की कीमत भी नहीं है।
यह बात कोई झूठ नहीं आज सही है।
आतंकी किसी राही का रास्ता रोकता।।2
बेरहमी से कितनी वह छुरा भोंकता।।2
चाह नहीं उसको राही के माल की,
यह बात तुम्हें लग रही होगी कमाल की।
खूनी के खून की बस इतनी कहानी,
खूनी को खूनों की संख्या बढ़ानी।।

अभी हाल में तुमने ऐसा देख लिया है।
पहलगांव में गोलियों से भून दिया है।
अरे ! इतिहास बताता है कि होगी तबाही,
निहत्थे मर जायेंगे, फिर किसकी गवाही।।

जाग रे सपूत, यह कौन रो रहा?
देख शायद तेरी माँ का निनाद है।
देश के लिए कलंक आतंकवाद है,
मसले नहीं हो सकते हल, कैसा विवाद है
देश के लिए.....।

निलय सचान

92

भारतीय वीरता का चिह्न अभियान सिंदूर

पहलगाम में 22 अप्रैल 2025 को,
25 लोगों ने अपनी अंतिम सांसें गिनी।
महिलाओं ने अथाह दुःख सहा, सभी ने परम शोक अनुभव किया,
अपने पति के स्वर्गावसान पर,
लेकिन कब तक वह मौन रहेंगी?
भारत की सेना, वायुसेना और नौसेना ने
7 मई 2025 को अभियान शुरू किया।

दुश्मन के शिविरों में आक्रामक अभियान चलाकर,
सिंदूर को न्याय का प्रतीक बना कर।
सिंदूर भारतीयों के हृदय में बसता।
अपने परिवार से दूर होने से,
दुःख के अतिरिक्त क्या ही होता ?
सिंदूर विश्वास और वीरता का प्रतीक बन गया।
शत्रु के घर में जाकर प्रतिशोध का प्रतीक बन गया।
नहीं रहेंगे अब हम चुप, नहीं सहेंगे अब हम दुख।
अकारण, अज्ञात, निर्मम आतंकवाद को मिटाकर ही पाएंगे चैन और सुख।
अकारण, अज्ञात, निर्मम आतंकवाद को मिटाकर ही पाएंगे चैन और सुख।

अलीशा भट्टाचार्य

93

बदलाव की पहली किरण

बदलाव की पहली किरण जब आती है,
मम्मी की आँखों में नई उम्मीद जगाती है।
"बेटा, अब पढ़ाई कर ले जरा,"
और मैं कहती –
"बस एक और reel... फिर शुरू करूँगी जरा !"

पापा बोले – "बेटा, अब आदतें बदल,
सुबह उठ, jog कर, बन थोड़ी सरल।"
मैं बोली – "हाँ पापा, बिल्कुल करूँगी!"
पर 11 बजे उठकर गर्व से कहती –
"देखा पापा, बदलाव आ गया...
अब alarm बंद करना सीख गई!"

बदलाव की किरण तो तब भी आई थी,
जब AI सबके दिलों में छा गई थी।
Companies ने निकाली नई schemes
और लोगों ने बनाई इसके इस्तेमाल से हजार memes।
ChatGPT से लिखवा रहे सब अपना गृहकार्य और कविता,
और घर पर सुनाई जा रही नई "AI की गीता।"

देश में भी बदलाव का शोर है,
हर गली में मेट्रो, हर जेब में UPI का जोर है।

पर खर्चा करने की बात आए तो,
पापा कहते – "घर पे भी बन जाएगा!"
अब इनको कौन समझाए,
Nike के जूते घर पर कैसे बन पाएँगे भला?

क्रिकेट में भी बदलाव का जमाना आया,
RCB ने 18 साल बाद सपना सजाया।
ट्रॉफी हाथ में आते ही सबने बोला –
"बदलाव के साथ ही तो जीत का रंग लाया!"

और राजनीति में भी बदल रहा है scene,
हर नेता कहता – "Youth ही dream!"
पर असली बदलाव वही कहलाएगा,
जब सोच में उजाला फैल जाएगा।

हँसी, ठिठोली और सपनों के संग,
हर कोई कहेगा –
"हाँ, मैं हूँ बदलाव की पहली किरण,
और यही किरण कल का सूरज बन जाएगा,
पर जो सोए रह गए बिस्तर में...
उनका सूरज भी डूब जाएगा।"

त्रिशा राजपूत माथुरिया

94

मन है, पंछी बन जाऊँ,

मन है, पंछी बन जाऊँ,
आसमान में जाकर पंख फैलाऊँ,
मैं भी इनका जीवन पाऊँ,
मैं भी मीठा–मीठा बोल बोलू,
मन हैं, पंछी बन जाऊँ।
ऊंचे ऊंचे पर्वत छुऊँ।

जंगल जंगल में उड़ घूमूं,
सब जग को देखूँ इठलाऊँ,
मन हैं, वही बन जाऊँ।

फिर कुत्तर, कुतर कर फल खाऊँ,
शीतल जल पी नदी का मैं इठलाऊ।
मन है, वही बन जाऊँ।

हिमांशु राय
स्माल वंडर स्कूल

95

शहीदों की गाथा

बलिदानों के बल पर जिसको वीरों ने संवारा,
ये देश हमारा जन–जन का प्यारा।

जहाँ भोले–भाले बच्चे भी आजाद तराने गाते है,
सीने पर गोली खाते है, पर पीठ नहीं दिखलाते हैं,
जहाँ 'इंकलाब' के नारों से गूंजा नभ सारा,
ये देश हमारा जन–जन का प्यारा।

जहाँ, वन्दे मातरम फाँसी के झूलों पर गाये जाते हैं,
माँ के चरणों में फूल नहीं यहाँ शीश चढ़ाये जाते हैं,
जहाँ घास की रोटी खाकर, दिन वीरों ने गुजारा,
ये देश हमारा जन–जन का प्यारा।

जहाँ वीरो की हुंकार सुनकर, आसमान थर्राते है,
जब देश पे विपदा आती है, मुर्दे तलवार उठाते है,
यमराज को भी रणभूमी में हमने ललकारा,
ये देश हमारा जन–जन का प्यारा।

जहाँ जौहर की ज्वाला बन नारी, अपना धर्म निभाती है,
जिन हाथो में चूडियाँ सजती, वो रण चण्डी बन जाती है,
झाँसी की रानी, पदमा बन दुश्मन को संहारा,
ये देश हमारा जन–जन का प्यारा।

जहाँ अस्सी वर्षों की हड्डी में फिर से जवानी आती है,
पग थमा न वीर सपूतो का जब रण भेरी बज जाती है,
जहाँ वीर कुँअर सिंह, लाल सरीखा राज दुलारा,
ये देश हमारा जन–जन का प्यारा।

जहाँ कुरूक्षेत्र भूमि में ईश्वर भी गीता उपदेश सुनाते है,
यहाँ कलम नहीं, तलवारों से इतिहास रचाये जाते हैं,
स्वाति धन्य जो जीवन, इस भू पर पाएगी दुबारा,
ये देश हमारा जन–जन का प्यारा।

स्वाति कुमारी

96

सिंदूर की दहाड़

निर्दोष निहत्थों पर हुआ था वार
आतंकी हमला पहलगाम
उजड़ गया माथे का नूर
सेना ने ठाना ऑपरेशन सिन्दूर

सिंधु का पानी तब रोका
यह पहला था ज्वाला का झोंका
7 मई का दिन जब आया
मिला सैन्य बल दिखाने का मौका

जल थल वायु का विस्तार
ड्रोन, राफेल, ब्रह्मोस हुई तैयार
आधुनिक तकनीक को भेजा सीमा पार
पाकिस्तान को पहनाया हार का हार

मिला चीन तुर्की के हथियारों का सबूत
मेरा देश बना और भी स्वावलंबी और मजबूत

किया ध्वस्त पाकिस्तान और उसका आतंकवाद
बना अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का संवाद

शून्य सहनशीलता का पाठ पढ़ाया
वीरता शक्ति का संदेश पहुंचाया
क्रिकेट में भी लगा यही नारा
सर्वोपरि है देश हमारा

ना रुका है, ना रुकेगा हिंदुस्तान
कायम रहे हमारे वीर,
उनका शौर्य और बलिदान

जय हिन्द !!

आद्विक देवानी

97

ऑपरेशन सिंदूर

ये कथा उस समय घटी
जब 'पाक' ने पहले आकर हमें छेड़ा था,
और फिर देने ईंट का जवाब पत्थर से
हमारी दो वीरांगनाओं ने उनका मुँह तोड़ा था।
ये बात है उसी पहलगाम की,
जिसे हमने 'भारत का स्विट्जरलैंड' कह छोड़ा था।

तुम्हें क्या लगा?
तुम घर में घुसकर मारोगे!
और हम चुप बैठ जाएँगे?
ये मत भूलो,
हमारे देश में वामिका – सोफिया जैसे शेर हैं
जो तुम्हें एक पल में नोच खाएँगे।

रिया

98

एकता में शक्ति

जहाँ भाईचारा, प्रेम और होती है भक्ति
ऐसा देश है मेरा भारत, जिसकी एकता में है शक्ति
जाति, धर्म के आधार पर भेदभाव नहीं,
सबको मिलता समान अधिकार है,

आपस में मिलकर मनाते हर एक त्योहार है।
चाहे भारत पर आए मुश्किलें हजार
फिर भी भारत ने कभी मानी न हार,
कोरोना ने भी भारत को बहुत था डराया
हर एक को कैद घर के अंदर करवाया
एकजुट होकर हमने जीती कोरोना की जंग,
इतनी बड़ी बीमारी भी कर न सकी हमारे हौंसले भंग।
बाढ़ भी न रास्ता रोक पाई हमारा
बह गया सब कुछ, हौसला फिर भी साथ था हमारा
वापिस फिर से घरों को सजा लेंगे
कृषि को फिर से हरा–भरा बना लेंगे
पुलवामा अटैक के धमाके आज भी दिलों को दहलाते हैं
पर गर्व है हमें अपने सैनिकों पर जो आज भी नहीं घबराते हैं।
दुश्मन को करारा जवाब दिया
सिंदूर आप्रेशन को सफल किया
जहाँ मानी जाती नारी, दुर्गा, चंडी और शक्ति,
ऐसा देश है मेरा भारत जिसकी एकता में है शक्ति।

अंशुमान

99

स्वदेशी अपनाओ

पहले बच्चे खाते थे, दूध जलेबी रस मलाई,
अब घर घर में आ गए हैं बर्गर पिज्जा फ्रेंच फ्राई।

दूध जलेबी रस मलाई से जो ताकत आती थी,
तन मन में तंदुरुस्ती और गालों पर लाली छाती थी।

दूध छाछ की ताकत को सॉफ्ट ड्रिंक ने छीन लिया,
चाउमीन मोमोस केक पेस्ट्री ने हमको बुद्धिहीन किया।

आजकल का जंक फूड केमिकल से भरा हुआ,
कोई पोषक तत्व नहीं है ये बिल्कुल सड़ा हुआ।

सोच समझ कर खाओ तुम बीमारी दूर भगाओ तुम,
जब तुम पौष्टिक खाओगे तन मन होगा सबल और महान बन जाओगे।

अरनव मिश्र

100

"सरकारी नीतियाँ"

नीतियों से चलती हैं. विकास की राह,
सरकार सजाती हैं सपनों की चाह।
हर योजना में छिपा हैं सुधार का संदेश,
आगे बढ़े भारत, यही है विशेष।

शिक्षा की नीति दे उजियारा नया,
स्वास्थ्य की राह दिखाए सहारा नया।
कृषि में सहूलियत उद्योग में बल,
हर वर्ग के हित में हैं इसके पहल।

नवाचार को गति, विज्ञान का सम्मान,
डिजिटल भारत का हो साकार अभियाना।
हर घर तक पहुँचे सुविधाओं की डोर.
नीतियाँ खोलें प्रगती के सबक़ीच द्वार।

सरकारी नीतियाँ हैं प्रगति का मान,
देश का भविष्य, उज्ज्वल पहचान।

एकलव्य कुमार वर्मा

अटल बाल हिन्दी कवि सम्मेलन 2025 की झलकियाँ

बौद्धिक संपदा भारत
एकस्व | अभिकल्प | व्यापार चिह्न
भौगोलिक उपदर्शन
INTELLECTUAL PROPERTY INDIA
PATENTS | DESIGNS | TRADE MARKS
GEOGRAPHICAL INDICATIONS

कार्यालय महानियंत्रक एकस्व, अभिकल्प एवं व्यापार चिह्न,
बौद्धिक संपदा भवन, प्लॉट सं–32, सेक्टर–14, द्वारका, नई दिल्ली–110078

Office of the Controller General of Patents Designs and Trademarks,
Bouddhik Sampada Bhawan, Plot no. 32, Sector -14, Dwarka, New Delhi -110078

Designed And Printed By-HBS, New Delhi